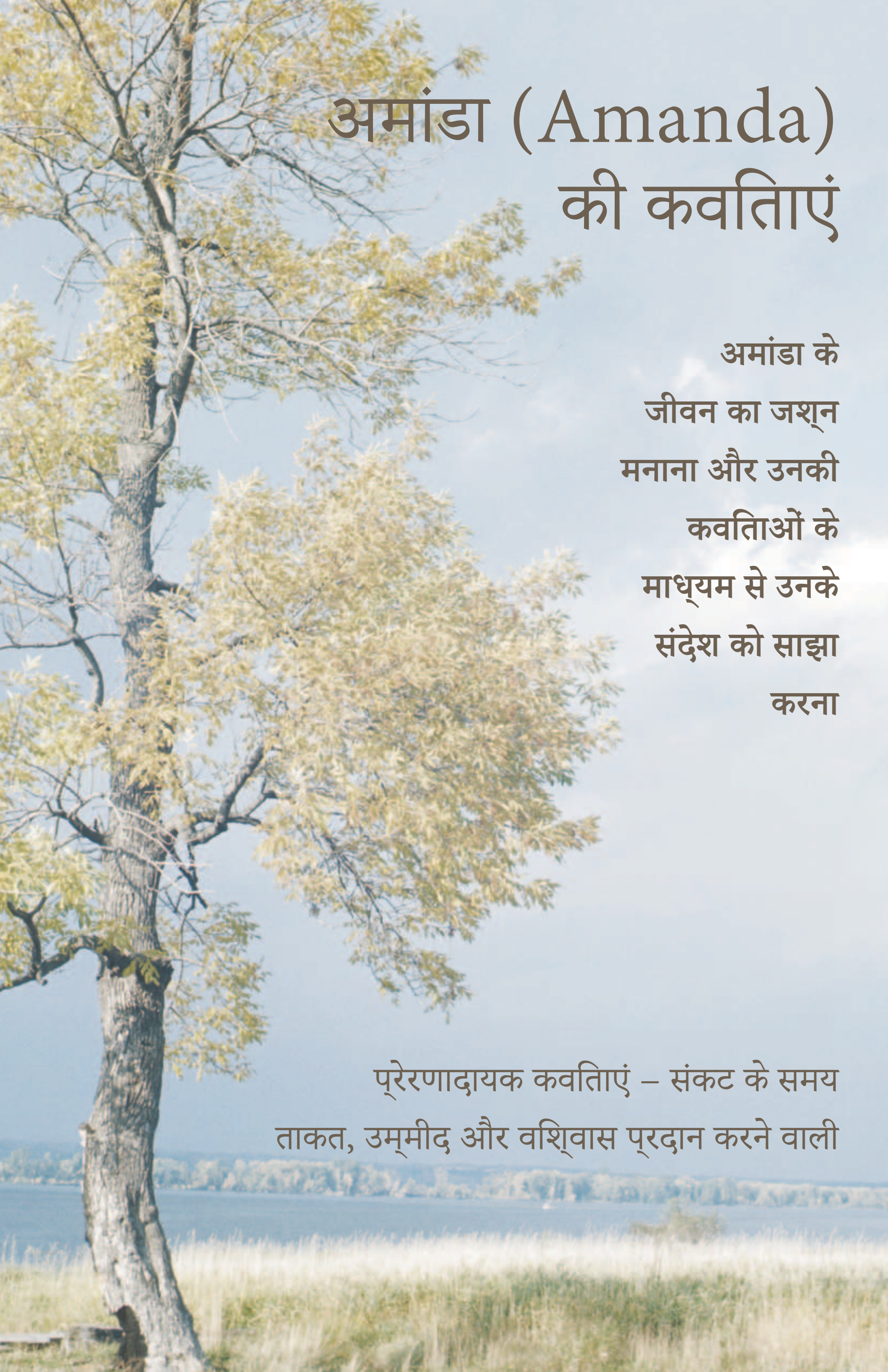

अमांडा (Amanda) की कविताएं

अमांडा के
जीवन का जश्न
मनाना और उनकी
कविताओं के
माध्यम से उनके
संदेश को साझा
करना

प्रेरणादायक कविताएं – संकट के समय
ताकत, उम्मीद और विश्वास प्रदान करने वाली

वश्विास के साथ जएिं,
जो दखिता है, उसके साथ नहीं।

2 Corinthians 5:7

आगे के पन्नों पर दी गई कवताएं अमांडा की अनुभूतयिों की व्यापकता की अभव्यिक्त हैं। उसके शब्द व्यक्त करते हैं क ईश्वर के साथ उसके संबंध ने कठनि समय में और बेहद चुनौतयिों के सामने भी, उसे कृतज्ञ बनाने में मदद की। अमांडा की यह इच्छा थी क उसकी कवताएं प्रकाशति की जाएं और दूसरों को प्रेरति करने और यह दर्शाने के लएि उन्हें दी जाएं क उसने (अमांडा ने) अपने वश्विास से कसि तरह ताकत हासलि की - यही अमांडा का संदेश है।

अमांडा की कविताएं

अमांडा के जीवन का जश्न मनाना

छोटी-छोटी चीज़ें अमांडा ने जीवन में छोटी-छोटी चीज़ों की सराहना करना सीखा।

भाग्यशाली टूटन परीक्षाओं के ज़रिए अमांडा ने ईश्वर की मौजूदगी को महसूस किया और उसका विश्वास और भी मजबूत हुआ।

अदृश्य कृपा अमांडा को पता था कि उसका जीवन हमेशा एक सा नहीं रहेगा, इसलिए उसने अपनी निगाहें ईश्वर पर रखते हुए, अतीत को जाने दिया और उस भविष्य को गले लगाया, जिसे ईश्वर ने उसके लिए तय किया था।

एक बेहतर दिन उपचार के दौरान उसने लिखा, "...एक बेहतर दिन के ख़्याल सिर्फ ख़्याल नहीं होते"।

वह उत्तर नहीं जो मैं चाहती थी अमांडा ने यह कविता तब लिखी, जब उसके परीक्षणों ने दर्शाया कि कैंसर वापस आ गया था।

प्रार्थनापूर्ण धैर्य इस कविता में अमांडा पूरी तरह से अपने जीवन को ईश्वर के विधान पर छोड़ देती है।

जकड़ी हुई अमांडा ने चिंता को अपने ऊपर हावी नहीं होने दिया, क्योंकि वह रोज़ाना प्रार्थना करने का समय निकाला।

अटूट वचन डॉक्टरों को आशंका थी कि अमांडा का कैंसर वापस आ सकता है, फिर भी, आरोन डीप्पा अमांडा से मुहब्बत करता रहा और उसने उससे विवाह करने की ठानी। 11/15/03 को एक शानदार विवाह समारोह में वह अमांडा डीप्पा बनीं।

जो छीन लिया गया विवाह के 3 महीने बाद, अमांडा इस ख़बर से हिल गई कि उसका कैंसर वापस आ गया था। ईश्वर पर विश्वास और आरोन के साथ से, वह मजबूती से खड़ी रही।

लबालब है प्याला कैंसर से जूझने वाले वर्ष अमांडा पर प्रतिकूल प्रभाव डाल रहे थे। वह कमज़ोर और दुबली है लेकिन उसे यकीन है, उसका विश्वास है और वह इंतज़ार करती है कि ईश्वर किसी दिन उसके प्याले को लबालब भर देगा।

जियो दिल से इस कविता मे अमांडा क्राइस्ट के लिए नाराज़गी व्यक्त करती है। उसने सवाल किया कि लोग अपने दिल मे ईश्वर के आकार वाले छेद मे ईश्वर के अलावा हर चीज़ फिट करने की कोशिश क्यों करते है।

नरिंतर समर्पण ईश्वर अमांडा के साथ धैर्यवान है क्योंकि उसने अपने जीवन को ईश्वर के विधान के प्रति समर्पित किया है।

नरिाशा के क्षण कैंसर से छह वर्षों तक लड़ने के बाद, अमांडा निराशा महसूस करती है और पीड़ा से भरी हुई है लेकिन उसका मुकाबला ईश्वर के शाश्वत आश्वासन और इस वचन से होता है कि यह जीवन ही अंत नहीं है।

पल भर के नोटिस में अमांडा कृतज्ञ, संतुष्ट, प्रेम से परिपूर्ण और शांत महसूस कर रही है और इंतज़ार कर रही है कि ईश्वर अपना वचन निभाएगा...वह पल भर की नोटिस पर तैयार है।

खोल दो मेरी आँखें अमांडा अपनी आँखें खोलने के लिए ईश्वर से आध्यात्मिक दृष्टि देने की प्रार्थना कर रही है, ताकि वह अपने जीवन के बारे में ईश्वर का विधान देख सके।

संपूर्णता जब अमांडा अपने जीवन के लिए ईश्वर के प्रयोजन को देखना शुरु कर रही है तो वह संपूर्णता के शांतिदायक भाव के बारे में लिखती है और ईश्वर के विधान के मुताबिक जीने की कोशिश करती है।

क्षणिक परीक्षाएं जब ईश्वर जीवन के तूफानों के बीच उससे मिलते हैं, तो अमांडा का विश्वास और बढ़ जाता है।

अनंत आशा जब अमांडा यह जानते हुए आगे बढ़ती है कि स्वस्थ होने के विकल्प धीमे पड़ते जा रहे हैं तो वह एकदम अंत तक, यहाँ तक कि मृत्यु होने तक ईश्वर की स्तुति करने का प्रण करती है।

हमेशा बोझ तले अमांडा के लिए यह निराशा भरा दिन है और कविता तब लिखी गई है जब परीक्षणों में इस बात का खुलासा हो गया है कि उसका कैंसर अब भी बढ़ रहा है।

टुकड़े समेटते हुए तीन दिन पहले इस ख़बर से अमांडा का जीवन छिन्न-भिन्न होकर बिखर गया कि उसका कैंसर वापस आ गया है। वह उन टुकड़ों को बटोरने और अपने जीवन को फिर से समेटने की कोशिश कर रही थी। अमांडा की कविता को पढ़ना बेहद दुखद था, इसलिए परिवार ने प्रोत्साहन देने वाली इन तीन कविताओं के साथ प्रतिक्रिया व्यक्त की।

फेंक दो टुकड़े लॉरा ने अमांडा को सांत्वना और सहयोग देने के लिए यह कविता लिखी।

ईश्वर लीसा ने अमांडा को सहज करने के लिए और उसे यह बताने के लिए यह कविता लिखी कि वह चाहती है कि अमांडा का जीवन बचा रहे, लेकिन वह यह भी जानती है कि स्वर्ग में प्रतीक्षा हो रही है। यदि लीसा के पास उसे जाने देने का अधिकार होता तो वह जाने तो देती, लेकिन प्रफुल्लित होकर नहीं।

<u>योजना के अनुसार</u> अमांडा के पति ने अमांडा को सहज करने के लिए यह कविता लिखी और यह कहकर मृत्यु का उसका डर दूर किया कि वह ईश्वर के शाश्वत विधान में विश्वास रखे।

<u>परमपिता के हाथों में</u> अमांडा सोचती थी कि वह ठीक हो सकती है और अपने जीवन में आगे बढ़ सकती है, सिर्फ यह महसूस करने के लिए कि जहाँ से उसने शुरु किया था, वहाँ यानि ईश्वर के हाथों की हथेली में वह ठीक थी।

<u>अभी तक तो नहीं</u> अमांडा में जीने की ज़बरदस्त इच्छा थी, लेकिन उसमें अपने जीवन के बारे में ईश्वर की इच्छा और उसके विधान के आगे समर्पण करने की भी ज़बरदस्त भावना थी; वह जानती थी कि ईश्वर का प्रेम और कृपा ही वह चीज़ थी, जिसकी उसे ज़रूरत थी।

<u>अब भी प्रतीक्षारत</u> अमांडा अब भी इंतज़ार कर रही थी कि ईश्वर के दूत उसे स्वर्ग तक ले जाएंगे। ईश्वर ने उसकी प्रार्थना का उत्तर दिया, जब इस कविता को लिखने के एक माह बाद उसने दुनिया को अलविदा कह दिया।

<u>एक बहन का प्रेम</u> यह कविता कहती है कि कभी भी प्यार न किए जाने से यह बेहतर है कि प्रेम पाया जाए और उसमें डूब जाया जाए। विवाह की यह फोटो अमांडा और उसकी जुड़वाँ बहनों, लीसा और लॉरा की है।

<u>मत मानो कभी हार</u> रोचेस्टर, एमएन में मायो क्लिनिक में चल रहे उपचार के दौरान, अमांडा जटिलताओं से पीड़ित हो गई। उसके पति ने उसका मनोबल बढ़ाने के लिए यह कविता लिखी और उसे कैलीफोर्निया में घर तक वापस आने की लड़ाई झेलने की ताकत दी।

<u>जीवन से त्रस्त, गंतव्य से प्रेरित</u> यह कविता अमांडा के पति ने उसे यह याद दिलाने के लिए लिखी कि यह जीवन अंत नहीं है, और यह कि हमें इस बात पर ध्यान देना चाहिए कि हम अपनी आखिरी साँस के बाद कहाँ जा रहे हैं।

<u>ईश्वर के बिना कैंसर को समझना</u> अमांडा ने उन सभी चीज़ों के बारे में लिखा जो वह कैंसर के कारण खो चुकी थी (सांसारिक दृष्टि)।

<u>ईश्वर के साथ कैंसर का अनुभव</u> अमांडा ने उन सभी चीज़ों के बारे में लिखा जो वह कैंसर के कारण हासिल कर पाई (शाश्वत दृष्टि)।

अमांडा के जीवन का जश्न मनाना

ये शब्द अमांडा के पति, टॉम द्वारा उसके स्मारक पर पढ़े गए।

पिछले कुछ दिनों से मै अमांडा की स्मृति को सम्मान देने वाले शब्दों को तलाशने के लिए जूझता रहा हूँ। मैने प्रार्थना की है कि ईश्वर मुझे राह दिखाए लेकिन कोई भी आज जैसे इस दिन के लिए कैसे तैयार हो सकता है? मै केवल कुछ मिनटों में जीवनभर की यादों को कैसे बयान करूं? आपको अमांडा - हमारी नन्ही बिटिया, के बारे में, उसकी सोने के समय की कहानियों से लेकर, उसका पहला दाँत टूटने, फुटबॉल के खेल से लेकर, वर्तनी सीखने तक, ग्रेजुएशन से लेकर, उसके विवाह तक बता सकता था...या ईश्वर में उसके अविश्वसनीय विश्वास के बारे में कुछ साझा कर सकता था। आखिरकार, मैंने ये दोनों ही काम करने का फैसला किया।

अमांडा अपनी अंतर्रात्मा की अभिव्यक्ति के लिए कविताओं का इस्तेमाल करती थी और अपनी अधपकी भावनाओं को कागज़ पर उतारती थी। अमांडा के सम्मान में, मै उसकी पहली कविता पढ़कर शुरुआत करना चाहूँगा जो उसने कैंसर का पता चलने के कुछ समय बाद ही, 16 वर्ष की उम्र में लिखी थी। इसका शीर्षक है - Little Things.

क्या आपने रात में कभी अपनी आँखें बंद की है
और हर सपने का मज़ा लिया है
अपने पति की आँखों में देखा है
सिर्फ उस आनंद को देखने के लिए?

क्या आप कभी समुद्र के किनारे पर टहलने निकले हैं
और आपने मुलायम रेत को अपने पैरों की अंगुलियों के बीच महसूस किया है
अपने किसी प्रियजन की मुस्कुराहट को याद किया है
उनकी नाक में पड़ने वाली छोटी सिलवट तक नीचे जाकर?

क्या आपने कभी अपने भीतर प्रकाश को महसूस किया है
जो अचानक चमकता है और तेजी से रोशन होता है
या अपने हाथों की हथेलियों को देखा है
उसकी हरेक जटिल रेखा को?

क्या आपने कभी माँ के मधुर स्पर्श का आनंद उठाया है
जब उसने रात को आपको थपथपाया
हे ईश्वर, इन सारी छोटी-छोटी चीज़ों के लिए शुक्रिया
दोस्तों के लिए, जीवन के लिए, दृष्टि के लिए?

हम अपनी बेटी, अमांडा के जीवन का जश्न मनाने के लिए यहाँ हैं। यह अक्सर कहा जाता है कि माता-पिता अपने बच्चों से ज़्यादा जीवित नहीं रहते और यह भी कि अपने बच्चे को दफनाना किसी माता-पिता के लिए सबसे दर्दभरा ऐसा अनुभव होता है, जो उन्होंने शायद ही कभी सहा हो। लेकिन, 23 वर्ष की जिंदगी के बाद, अमांडा ने हमें सिखाया कि आज अंतिम संस्कार नहीं है, यह एक जश्न है, उसके जीवन का जश्न और, इससे भी ज़्यादा महत्वपूर्ण रूप से, क्राइस्ट के माध्यम से मृत्यु पर उसकी जीत का जश्न।

अमांडा न्यूपोर्ट बीच में, अपने घर से कुछ मील की ही दूरी पर, 10 जून, 1982 को पैदा हुई थी। उस दिन, लिंडा और मुझे उस यात्रा के बारे में कोई अनुमान नहीं था जो हम शुरु करने वाले थे या जिसके बाद हमारी जिंदगियाँ हमेशा के लिए बदल जाने वाली थी। अमांडा हमारे चार बच्चों में पहली थी और जल्दी ही “डैडी की दुलारी बेटी” बन गई। लिंडा को थोड़ी जलन होती थी, लेकिन अमांडा के कार की सीट में फिट होने के समय से लेकर, वह हर जगह मेरे साथ गई। हमारे कूल्हे सटे होते थे और उसने जल्दी ही पिकअप ट्रक और देशी संगीत को पसंद करना सीख लिया।

मै कभी नही भूलूंगा कि जब वह गैराज का दरवाजा खुलने की आवाज़ सुनती थी तो कैसे वह हर सुबह अपने बिस्तर से कूदती और खिड़की की तरफ दौड़ती थी और हाथ हिलाकर मुझे अलविदा कहती थी जब मै काम के लिए जाता था। वह ऐसा करने से एक भी दिन नहीं चूकी। हम जुदा नहीं हो सकते थे और हर दिन मै इंतज़ार नही कर पाता था कि कब काम से घर लौटूँ और उसके साथ समय बिताऊं। वह मेरी नन्ही शैली बैले (Shelle Belle) थी। मै कभी भी अभिभावक-अध्यापक मिलन कार्यक्रम, संगीत समारोह, पुरस्कार समारोह, फुटबॉल के खेल या किसी अन्य कार्यक्रम से गैरहाज़िर नही रहा। मै मिस्टर मॉम था और मुझे इस पर गर्व था। वह मेरी मीठी बेर (Sugar Plum) थी और मै उसका खट्टा आडू (Sour Peach) था।

मेरे पास अमांडा के बड़े होने की बहुत सारी शानदार यादे है। लेकिन, मुझे एक वह तारीख भी याद है, जो मेरे दिमाग में हमेशा चुभती रहेगी। वह तारीख थी 10 नवंबर, 1998 और अमांडा केवल 16 साल की थी। उस दिन मैने वे चार शब्द सुने जो कोई भी माता-पिता कभी सुनना नहीं चाहते, “आपकी बेटी को कैंसर है।”

यह पूरे परिवार को सदमा पहुँचाने वाली ख़बर थी, लेकिन अमांडा एक योद्धा थी और इससे भी ज्यादा, उसका ईश्वर और जीसस क्राइस्ट में आश्चर्यजनक रूप से ज़बरदस्त विश्वास था - यह एक ऐसा उपहार था, जो उसे उसकी माँ से मिला था। मुझे याद है कि इस बुरी ख़बर के बाद मै उसे घर ले गया और उसके होने वाले इलाज के बारे में उससे बात करता रहा। अमांडा भयभीत नही थी, क्योंकि उसे पता था कि “डैड सब कुछ ठीक कर देंगे।”

वह और मै शाम को घूमने के लिए बाहर गए और उसने मेरी ओर देखा और कहा, “मै बहुत खुश हूँ कि मुझे युवावस्था में ही कैंसर हो गया है।” मै उसकी बात सुनकर सन्न रह गया और तब उसने मुझे समझाया: “इस कैंसर के होने ने मेरी आँखें खोल दी है और अब मै जिंदगी को इतने साफ तौर पर देख सकती हूँ। मै इन चीज़ों के बारे में चिंता करती थी कि मैने किस तरह के कपड़े पहने या किस तरह की कार को मै ड्राइव करूंगी। अब, वह सब इतना महत्वपूर्ण नज़र नही आता। मै अपने जीवन का एक भी मिनट किसी नकारात्मक विचार पर गँवाना नही चाहती। अधिकांश लोग काफी उम्र तक जीते है और इस बात को समझ नही पाते। लेकिन मैने इसे 16 साल की आयु में ही समझ लिया है और अब मेरे पास एकदम अलग तरह से जीने के लिए मेरी पूरी जिंदगी है।” ऐसी थी मेरी अमांडा। हम अक्सर सोचते है कि हम अपने बच्चों को राह दिखाते है लेकिन उस समय के बाद से, अमांडा ने मुझे राह दिखाई।

उसके द्वारा लिखी गई कविताएं उसके निरंतर मानसिक विकास को दिखाती है जो उसने कैंसर के साथ अपनी 7 वर्ष की लड़ाई के दौरान हासिल किया था, क्योंकि उसके विश्वास की लगातार परीक्षा ली गई और वह लगातार मजबूत हुआ। अमांडा हमेशा चाहती थी कि उसे उसके विश्वास के कारण याद रखा जाए और उसने कभी शोक महसूस नहीं किया। वह चाहती थी कि ईश्वर जैसा चाहे, उस तरह से उसका इस्तेमाल करे, भले ही इसका अर्थ दूसरों को यह दिखाना हो कि अपनी बीमारी के दौरान उसने किस तरह से ईश्वरीय शक्ति हासिल की।

अमांडा ने मुझे बताया कि वह निष्क्रिय ईसाई नहीं बनना चाहती थी। वह रोज़ बाइबिल पढ़ती थी और इस कोशिश में किताबों, प्रार्थनाओं और बाइबिल के अध्ययनों के साथ अपनी पढ़ाई पूरी करती थी, ताकि जैसा वह कहती थी कि वह अपने विश्वास के अगले स्तर तक पहुँच सके।

मै उसकी एक कविता पढ़ना चाहूँगा जो बताती है कि वह कौन थी और किस बात का प्रतिनिधित्व करती थी। यह एक प्रकार से विश्वास से भरी कविता है जहाँ अमांडा क्राइस्ट के लिए नाराज़ हो जाती है। इसका शीर्षक है - Live by Heart.

तुम वहाँ बेवजह बैठे इंतज़ार कर रहे हो
जीवन को अपने पास से गुज़र जाने दे रहे हो
तुम कहते हो कि मेरा ईश्वर तुम्हारे लिए नहीं है
क्या तुम इसका कोई अच्छा कारण बता सकते हो कि क्यों?

तुम मुझे बताते हो कि मेरा विश्वास
सहायता देने वाली छोटी सी बैसाखी है
तुम्हें आसानी से धोखा नहीं दिया जा सकता
तुम्हें सबूत, प्रमाण चाहिए, कुछ ऐसा
जिसे तुम छू सको

कुछ लोग दावा करते है कि ईश्वर नहीं है
जब वे किसी की रोज सेवा करते हैं
तो वह अहम् का स्वरूप बन जाता है
और हमेशा अपनी राह चाहता है

तुम खालीपन का भाव महसूस करते हो
तुम अंदर पीड़ा पाते हो
तुम आत्म-पीड़ा का आनंद लेते हो
स्वार्थी अभिमान से नियंत्रित होकर

उन चीज़ों में निवेश करते हो जो सारहीन है
वे चीज़े जो कभी नहीं टिकेंगी
तुम अपने जीवन का परित्याग करने से इंकार करते हो
क्योंकि अतीत में तुम्हें चोट पहुँचाई गई थी

ईश्वर को मानने से इंकार करते हुए
तुम मेरे विश्वास को अलग रखते हो
तुम अपनी सशक्त बुद्धि से जीते हो
वैसे ही जैसे मै अपने आनंदित हृदय के साथ जीती हूँ

मेरा विश्वास शक्ति से भरा उत्प्रेरक है
तुम्हारा खुद में विश्वास, अड़चन पहुँचाने वाला अवरोध है
तुम रेत पर अपने जीवन का निर्माण करते हो
जबकि मै अपनी शाश्वत चट्टान पर टिकी हूँ

तुम अपनी बुद्धि पर टिके रहो
और तुम स्वार्थी आत्मा में डूब जाओगे
ईश्वर के आकार वाले छिद्र में, खाली स्थान में
ईश्वर के अलावा सब कुछ फिट करने की कोशिश करते हो

अपना कीमती समय बर्बाद करना बंद करो
अभिमान के कारागर से
प्रयोजनहीन और नासमझ पलायन
तो उस दिन, जब ईश्वर सबूत देगा
प्रमाण देगा, कुछ ऐसा जिससे तुम इंकार नहीं कर पाओगे -
तुम्हें छोड़ा नहीं जाएगा।

अमांडा डीप्पा, 2004

अमांडा के बारे में और जिस कठिन जीवन को उसने जिया, उससे बहुतों के दिल टूटे हैं। मैं अक्सर आश्चर्य करता था कि यदि वह कभी बीमार न हुई होती तो जीवन कैसा रहा होता। लेकिन उसने अपने जीवन का आनंद लिया, ईश्वर, परिवार, और दोस्तों तथा अपने प्यारे पति आरोन के लिए प्रेम से परिपूर्ण हो गई। उसके जीवन की विशिष्टता को केवल उन वर्षों की संख्या से नहीं मापा जा सकता, जितने वर्ष वह जीवित रही; बल्कि इससे मापा जा सकता है कि उन वर्षों में उसने क्या हासिल किया। हम सभी को आश्चर्य हो सकता है कि क्या हमारी जिंदगियों ने किसी (के जीवन) में कोई फ़र्क पैदा किया है। उस नज़रिए से, अमांडा ने पूरा जीवन जीया, बहुत कुछ हासिल किया और जिंदगियों में उन लोगों से कहीं ज़्यादा फ़र्क पैदा किया, जो बुढ़ापे तक जीते हैं।

रोग पता लगने के दिन से उसके चले जाने के दिन तक, ईश्वर ने कृपा करके हमें अमांडा के साथ सात और वर्षों का समय दिया और उसके लिए मैं हमेशा उसका (ईश्वर का) शुक्रगुज़ार रहूँगा। उस समय के दौरान हमने हाई स्कूल ग्रेजुएशन, 18वें और 21वें जन्मदिन का आनंद लिया, और उसके विवाह पर मैं उसके साथ गलियारे में घूमने निकला। वे कुछ ऐसी मूल्यवान स्मृतियाँ हैं, जिन्हें मैं हमेशा संजोकर रखूंगा।

उसकी मृत्यु से पहले, अमांडा ने कहा कि यदि वह ईश्वर की ओर मुड़ने में एक भी व्यक्ति की मदद कर सकी, तो यह उसके पिछले सात वर्षों के दर्द और तकलीफों का ईनाम होगा। मैं आपको बता सकता हूँ कि उसमे मुझे ईश्वर की ओर प्रेरित किया और मुझे बेहतर व्यक्ति और बेहतर ईसाई बनने के लिए प्रेरित किया। यह उसकी विरासत का एक हिस्सा है और मेरे शेष जीवन भर मेरे भीतर जिंदा रहेगी।

अमांडा ने अपनी अंतिम इच्छाएं साझा की और वे थीं:

- मैं चाहती हूँ कि मेरे स्मारक पर ये गीत बजाया जाए “वे मुझे कैसे याद रखेंगे (How will they remember me)”।
- मैं नहीं चाहती कि आप मुझे भूल जाएं।
- मैं चाहती हूँ कि मेरी कविताएं प्रकाशित कराई जाएं और दूसरों को प्रेरित करने और उन्हें मेरे विश्वास से, मेरी शक्ति का स्रोत दिखाने के लिए निःशुल्क प्रदान की जाएं।
- मैं कार्यस्थल में हर उस व्यक्ति को धन्यवाद देती हूँ, जिसने इतने वर्षों तक मेरी और मेरे परिवार की मदद की। मैं उन्हें बताना चाहती हूँ कि मैं उनके सहयोग के लिए हमेशा कृतज्ञ रहूँगी।
- मैं अपने परिवार और दोस्तों से चाहती हूँ कि वे क्राइस्ट को उसी तरह स्वीकार करें, जैसे मैंने किया, मैं स्वर्ग से उन सबको देखूंगी।

मैं केवल इतनी ही कल्पना कर सकता हूँ कि ईश्वर स्वर्ग में अमांडा को गले लगा रहा होगा और उससे कह रहा होगा, “मेरी अच्छी और निष्ठावान सेविका, तूने बहुत अच्छा किया।”

अमांडा, मैं तुम्हारी कमी महसूस करता हूँ।
मेरे दिल में, मैं तुम्हें हमेशा प्यार करूंगा।
डैडी

छोटी-छोटी चीज़ें

क्या आपने रात में कभी अपनी आँखें बंद की हैं
और हर सपने का मज़ा लिया है
अपने पिता की आँखों में देखा है
सिर्फ उस आनंद को देखने के लिए?

क्या आप कभी समुद्र के किनारे पर टहलने निकले हैं
और आपने मुलायम रेत को अपने पैरों की अंगुलियों के बीच महसूस किया है
अपने किसी प्रियजन की मुस्कुराहट को याद किया है
उनकी नाक में पड़ने वाली छोटी सिलवट तक नीचे जाकर?

क्या आपने कभी अपने भीतर प्रकाश को महसूस किया है
जो अचानक चमकता है और तेजी से रोशन होता है
या अपने हाथों की हथेलियों को देखा है
उसकी हरेक जटिल रेखा को?

क्या आपने कभी माँ के मधुर स्पर्श का आनंद उठाया है
जब उसने रात को आपको थपथपाया
हे ईश्वर, इन सारी छोटी-छोटी चीज़ों के लिए शुक्रिया
दोस्तों के लिए, जीवन के लिए, दृष्टि के लिए?

अमांडा ट्वैलमैन, 1999

*जीसस ने कहा, "छोटे बच्चों को मेरे पास आने दो, और उसमें अड़चन मत डालो, क्योंकि स्वर्ग का साम्राज्य इन जैसों के लिए ही है। **Matthew 19:14***

भाग्यशाली टूटन

अपने सहज जीवन में संतुष्ट
मै हर दिन जी रही हूँ
जीवन को सहजता से ले रही हूँ
चीज़ों को अपनी तरह से कर रही हूँ

मेरा जीवन औसत दर्जे का था
हे ईश्वर, मै शांत खड़ी थी
धीमे-धीमे कदमों से अपने पथ पर चल रही थी
तुम्हारी संपूर्ण इच्छा की उपेक्षा करते हुए

इन सब को कुचलते हुए आया
वह काला और शांत कर देने वाला दिन
हे ईश्वर, मै रूदन रोक नहीं पा रही हूँ
इन सब को दूर मत ले जाओ

हर दिन मै इंतज़ार कर रही हूँ
मेरे दिमाग में प्रश्न कौंध रहे है
ईश्वर मुझे उत्तर देता है
हे पिता, मै कितनी अंधी रही।

मेरे गहन अंधेरे में
ईश्वर अब भी मुझे अपने समीप खींचता है-
बच्चे, मै तुम्हें पुकार रहा हूँ
हे ईश्वर, मुझे नहीं सुनायी देता

धीरे-धीरे मै डूब रही हूँ
मै हर रात रोती हूँ
हे प्रभु, मुझे ज़रूरत है तुम्हारी शक्ति की
क्या ईश्वर सचमुच सुनता है मेरी फरियाद?

पर फिर वह उठाता है मुझे
मेरी पीठ पर लगी धूल को झाड़ते हुए
मुझमें उम्मीद और वो विश्वास भरते हुए
जिसकी मुझमें कमी थी

हे प्रभु, यह मुश्किल होता जा रहा है
मै भाग जाना चाहती हूँ
लेकिन ईश्वर खड़ा है मेरे साथ
इसलिए मुझे रुकने की शक्ति मिलती है

हे ईश्वर मै झुकी हूँ घुटनों पर
तुम बुदबुदा रहे हो मेरा नाम
तुमने मुझे दिया है नया जीवन
मै पहले जैसी नहीं हो सकती कभी

तुमने अग्नि जला दी है मेरे हृदय में
पापमुक्त कर दिया है मुझे अपनी कृपा से
तुम्हारा प्रेम है जलप्रवाह की तरह-
हे ईश्वर, मुझे दिखता है तुम्हारा चेहरा

- अमांडा ट्वैलमैन, जून 2002

हे प्रभु, तुमने मुझे तलाश लिया है और जान लिया है!
Psalm 139:1

अदृश्य कृपा

अपने रचयिता के साथ आमने-सामने
मेरी आँखें पूरी तरह खुली हैं
मेरे कुछ नए अंश हो गए हैं जीवंत
लेकिन उनके बारे में क्या जो मर गए?

यह जानते हुए कि मुझसे क्या महसूस करने की अपेक्षा की जाती है,
मैं अपने दिमाग में करती हूँ संघर्ष
धीरे-धीरे, मैं आगे कदम रखती हूँ, अपनी साँस रोकती हूँ
पीछे मुड़कर देखती हूँ कि क्या छूट गया है पीछे

सारी निगाहें टिकी हैं मुझ पर
चकित होते हुए कि मैं क्या करूंगी
मैं हिचकिचाते हुए अतीत को फेंक देती हूँ
क्योंकि ईश्वर ने मुझे गर्व से कुछ नया सौंपा है

ये नया है ज़्यादा मज़बूत, आनंददायक, परिपक्व
उससे भी ज़्यादा जितनी मैंने कल्पना की थी
कभी मुड़कर पीछे न देखने के लिए तैयार
या कम-से-कम, ऐसा लगता है…

कभी-कभी, मुझे खलती है पुराने अच्छे दिनों की कमी
एक बच्चे सी मासूमियत खो गई
लेकिन ईश्वर ने उसके बदले दिया अडिग विश्वास
यह जानते हुए कि यह उस कीमत के बराबर ही था

इसलिए जब लगता है मैं इस संसार में डूब रही हूँ,
खुद को कम के लिए तैयार करने की कोशिश करते हुए
मैं अपनी पीठ फेर लूंगी और नज़रें उठा लूंगी
केवल उस एक ईश्वर के लिए, जिसे प्रभावित होने की मैं करती हूँ परवाह

अमांडा ट्वैलमैन, 11/29/02

एक बेहतर दनि

अपनी आँखें बद करती हूँ
कसिी बेहतर दनि के ख़्यालों के पास
कहीं दूर नकिल जाने के लएि
मैं अतीत की यादों में खो जाती हूँ
मैं भवषि्य के सपने देखती हूँ
वर्तमान के सवािय कुछ भी
अनेक बार मैं कमज़ोर
थकी हुई
हताश
नरिाश महसूस करती हूँ
मैं हार मान लेना चाहती हूँ
अपने भवषि्य के लएि लड़ना
एकमात्र चीज़ है
जो मेरा आत्मवशि्वास बनाए रखती है
सारे दनि मैं अपनी मुस्कुराहट बनाए रखती हूँ
मैं बहाना करती हूँ कि इससे आहत नहीं हूँ
मैं उतनी मज़बूत बनी रहती हूँ जतिनी रह सकती हूँ
परंतु कोई भी सच नहीं जानता
रात में जब पूरी तरह अकेली होती हूँ
मैं आँसुओं को
अपने चेहरे पर बहने देती हूँ
मैं उन्हें पोंछने की
या रोकने की कोशशि नहीं करती
मैं ईश्वर की दुहाई देती हूँ
और अनुनय करती हूँ अपनी पछिली जदिगी के लएि

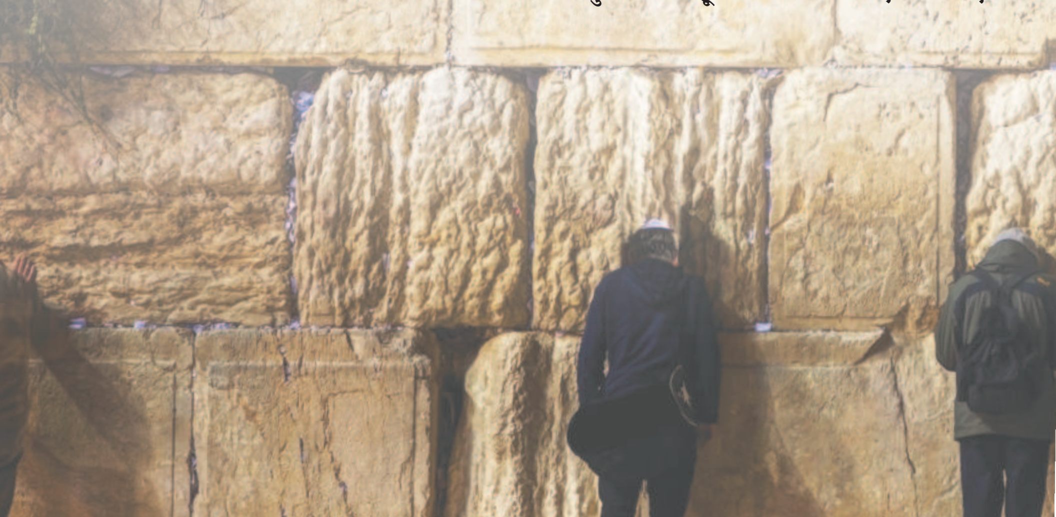

हर कोई मदद करना चाहता है
मेरा हाथ थामना चाहता है
लेकिन यह बात कोई नहीं समझता
कि यह कैसा महसूस होता है...
मेरे बाल गिरते जा रहे हैं
मैं बेहद कुरूप महसूस करती हूँ
मेरा शरीर मेरा नहीं है,
मैं अपने भविष्य की योजना नहीं बना सकती
मैं बेहद कमज़ोर महसूस करती हूँ
मैं शायद ही जिंदा महसूस करती हूँ
मेरा दिल आहत हो रहा है
मेरी आँखें अब और नहीं रो सकतीं
मुझे इससे घृणा है
यह जो कुछ
मेरे साथ
मेरे परिवार के साथ
मेरे जीवनसाथी के साथ
मेरे दोस्तों के साथ करता है, मुझे घृणा है उससे
काश जल्दी से सब खत्म हो जाए
इसे चले जाने दो
हे ईश्वर, मुझे शक्ति दो
मेरे पास से मत जाओ
जब तक बेहतर दिन के ख़्याल
सिर्फ ख़्याल न रह जाएं

अमांडा ट्वैलमैन
12/29/02

वह उत्तर नहीं जो मैं चाहती थी

हे ईश्वर, हर रात अपने घुटनों पर
एक ही प्रार्थना से तुम्हारी मनुहार करती हूँ
बस एक उत्तर की आशा में
इंतज़ार को बर्दाश्त करना असंभव है

आखरिकार तुम्हारा उत्तर आता है
इतना नर्विवाद और स्पष्ट
लेकनि प्रभु, यह वह नहीं था जो मैं चाहती थी
और पहले तो मैं डर से भर गई

पल भर की पीड़ा में,
संदेह के बाद असंख्य आँसू आए
हे ईश्वर, तुम्हारी योजना क्या है?
मुझे पूरा वशि्वास था, तुम मेरी मदद करोगे

फरि ईश्वर धीरे से मेरे हृदय से कहता है
अपनी संपूर्ण इच्छा प्रकट करता है
मेरी नरिंतर कमज़ोरी से उसकी शक्ति प्रकाशति होती है
इसलएि वस्मिय से मैं न:िशब्द खड़ी रह जाती हूँ
मैं हर सुबह जागती हूँ

मेरे चेहरे पर सबसे बड़ी मुस्कान होती है
आने वाले कल के प्रति पूरी तरह अनशि्चति
लेकनि उसकी कृपा में हमेशा आश्वस्त हूँ
इसलएि मैं कभी वशि्वास नहीं खोऊंगी

जब ईश्वर मुझे जूझना सखिाता है
परीक्षा की घड़यिों में भी मैं आनंद से सराबोर रहती हूँ
मुझे पता है कि एक आनंदमय दनि
प्रभु हर आँसू को पोंछ देंगे!

अमांडा ट्वैलमैन
1/16/03

मेरी कृपा तुम्हारे लएि पर्याप्त है, क्योंकि कमज़ोरी में
मेरी शक्ति को परपूिर्ण बनाया गया है।
2 Corinthians 12:9

प्रार्थनापूर्ण धैर्य

थकी और बलिकुल टूटी हुई
तूफान से त्रस्त
प्रार्थनामय धैर्य से कर रही हूँ संघर्ष
मेरा वश्विास इतना थका और टूटा है

लड़ रही हूँ अपना सर उठाए रखने के लिए
क्या समापन रेखा आगे खसिकती जा रही है?
मेरी आँखें शांत स्वर्ग से प्रश्न करती हैं
पर मेरे होंठ प्रार्थना करना कभी बंद नहीं करते

जब अपने प्रयोजन के लिए ईश्वर मुझे साँचे में ढालता है
तो मेरा वश्विास नर्मिल हो जाता है
अचानक हर काला बादल
पूरा भर जाता है आशा की करिणों से

अब भवष्यि से
या उन चीजों से डर नहीं लगता, जो मेरे वश के बाहर हैं
मैं ध्यान लगाती हूँ अनंत पर
मेरी अंतर्रात्मा की दशा पर

तब...

वह उत्तर मलिता है जो मैं चाहती थी
बहुत पहले एक प्रार्थना के लिए
वस्मिय से मैं नःशिब्द खड़ी हूँ
आभा में दमकते हुए

स्वर्ग की ओर अपनी आँखें उठाते हुए
जब मैं कृतज्ञ हूँ और सर्फि भयभीत नहीं हूँ
चकति होकर मैं अपने घुटनों पर बैठ जाती हूँ
क्योंक िमुझे बनाया गया है डरते हुए और अनोखे तरीके से

वशिेष अधकिार से जीवन जीने का
अचानक संपूर्ण बोध होता है
जब मैं इंतज़ार कर रही होती हूँ क िईश्वर ने क्या योजना बनाई है
मधुर असमंजस में मुस्कुराते हुए

द्वारा: अमांडा ट्वैलमैन, 9/1/03

जकड़ी हुई

भागमभाग में फंसे हुए
आप रोज जागते हैं
क्या आप सचमुच कृतज्ञ हैं
क्या आपके पास प्रार्थना के लिए समय है?

अभिभूत और उन्मत्त
जब आपके रास्ते में परीक्षाएं आती हैं
चिंता आपको काबू नहीं कर सकती
यदि आपका प्रार्थना में विश्वास है

भविष्य में लिपटा हुआ
दिन का लुत्फ उठाना भूल जाना
अतीत चला गया, आपको क्षमा कर दिया गया
बस रुक जाएं, साँस लें और प्रार्थना करें

आप शांति से काम कर रहे हैं
उस दिन का इंतज़ार कर रहे हैं
बहुत बढ़िया, अच्छे और वफ़ादार सेवक...
यही वो सब है, जो ईश्वर कहना चाहता है

अमांडा ट्वैलमैन
9/18/03

अटूट वचन

अमांडा डीप्पा, 2003

जब सब कुछ ठीक से चल रहा है
और मेरे पास एक शानदार दनि है
तो ईश्वर का गुणगान कतिना आसान है
और इतने आनंद से मैं प्रार्थना करती हूँ

धीरे-धीरे मैं भूल जाती हूँ ईश्वर को
"मैं इसे खुद ही कर सकती हूँ"
खालीपन अंदर भरने लगता है
और मैं अकेला महसूस करने लगती हूँ

ईश्वर नरिंतर दस्तक दे रहा है
पर मेरा हृदय ईश्वर को अंदर नहीं आने देता
क्योंक मैं बहुत वचिलति हूँ
तनाव और स्वार्थी पाप से

बहुत आलसी और बेहद जद्दिी हूँ
यह मानने के लएि क मैं कमज़ोर हूँ
इसके बजाय मैं अंधेरे में भटकती हूँ
जबक मुझे ज़रूरत तो है ईश्वर को खोजने की

खुद अपना भार ढोते हुए
इतने भारी, क मैं टूट जाती हूँ, लड़खड़ा जाती हूँ
दुर्भाग्य से, यह मेरे ही चेहरे पर गरिता है
मुझे वनिम्र रहना सखािने के लएि

जीवन की राह खुरदुरी और पथरीली हो जाती है
और मेरे पास एक भयानक दनि है
क्या मैं ईश्वर से नाराज़ हूँ
मेरे रास्ते में परेशानी आने देने के लएि?

फरि मैं ईश्वर के वचनों के बारे में सोचती हूँ
अनंतकाल से उसने सारे वचनों को नभािया है
उसने कहा क वह मुझे कभी नहीं छोड़ेगा
लेकनि उसने कभी वादा नहीं कयिा क मैं नहीं गरिूंगी

वह मुझे लपटों से नकािल ले जाएगा
मुझे मुसीबत का सामना करने की शक्त दिेगा
अकेली तो मैं एक इंच भी चल नहीं सकती
क्राइस्ट के साथ मैं मीलों जा सकती हूँ

तो जब सब ग़लत हो रहा है
और मैं अपने सबसे अंधेरे दनिों का सामना कर रही हूँ
एक प्यारा, भरोसेमंद ईश्वर मुझे सहारा देता है
जो नरिंतर स्तुत कि पात्र है!

जो छीन लिया गया

मेरी राहों में अवरुद्ध और निःशब्द
मेरा दिल बिलकुल चूर-चूर हुआ महसूस करता है
जीवन इतना स्थिर, इतना शानदार दिखाई पड़ता था
जब तक कि मेरी आशाओं के टुकड़े-टुकड़े नहीं हो गए

लगता है खाली हाथ खड़ी रह गई
मेरा विश्वास स्तब्ध और विचलित है
भय और भ्रम में जमा हुआ
अचानक सब कुछ छिन गया, मैं परित्यक्त महसूस करती हूँ

भीतर गहराई से मैं जानती हूँ सच
उसका प्रेम हमेशा मौजूद है
फिर भी मेरा कोई अंश निराशा से क्रंदन करता है
क्योंकि जीवन एकदम अनुकूल नहीं है

मैं उदाहरण पेश करने के लिए संघर्ष करती हूँ
लेकिन लक्ष्य से एकदम पीछे रह जाती हूँ
निराशा में गिर पड़ती हूँ ज़मीन पर
लगता है मुझे अंधेरे में छोड़ दिया गया है

मगर विश्वास की एक नन्हीं किरण
मेरे मस्तिष्क में कौंधती है
जो पनपी थी मेरे अतीत की परीक्षाओं में
होती रही निरंतर परिष्कृत

वंचित और पूरी तरह से खाली हाथ
मेरे हाथों में रह जाती है सिर्फ एक चीज़- भक्ति
आनंदित हूँ-नहीं चाहिए कुछ और
इस रेस में दौड़ने और मज़बूती से टिके रहने के लिए

अमांडा डीप्पा, 2/26/04

लबालब है प्याला

इस जीवन से बेहद त्रस्त
हे प्रभु, मुझे हार मान लेने दो
मेरा दर्द ले लो
मेरा प्याला खाली कर दो

मेरी अंतर्रात्मा की पीड़ा
अब भी दबी है भीतर कहीं गहराई में
थामे हुए आँसुओं का सैलाब
इजाज़त नहीं है मुझे चीखने की

मानवीय कमज़ोरी हावी है मुझ पर
मैं भावनाओं के वशीभूत हूँ
डूबी हूँ अज्ञात जीवन,
-एक अशांत महासागर में

मेरा चेहरा, मुस्कुराहट का मुखौटा ओढ़े
धोखा देता है उसे जो भीतर है
मेरा दलि, नरिाशा से टूटा हुआ
लड़ रहा है ऐसी लड़ाई जो मैं जीत नहीं सकती

मदद करो, मेरी इकलौती आशा
आज, बीता हुआ कल और आने वाला कल-सब एक जैसे
मेरे भीतर उजाला नहीं आने देते
बहा ले जाते हैं शोक की लहर में

रा अडगि वशि्वास कतिना कमजोर है
खत्म हो गया मेरा सारा साहस
लेकनि मुझे यकीन है, वशि्वास है, मुझे इंतज़ार है
उस एक दनि का...
जब मेरा ईश्वर मेरे प्याले को लबरेज कर देगा

अमांडा डीप्पा
3/3/04

जागो दुनिया से

अमांडा डीप्पा द्वारा, 3/24/04

तुम वहाँ बेवजह बैठे इंतज़ार कर रहे हो
जीवन को अपने पास से गुज़र जाने दे रहे हो
तुम कहते हो कि मेरा ईश्वर तुम्हारे लिए नहीं है
क्या तुम इसका कोई अच्छा कारण बता सकते हो कि क्यों?

तुम मुझे बताते हो कि मेरा विश्वास
सहायता देने वाली छोटी सी बैसाखी है
तुम्हें आसानी से धोखा नहीं दिया जा सकता
तुम्हें सबूत, प्रमाण चाहिए, कुछ ऐसा जिसे तुम छू सको

कुछ लोग दावा करते हैं कि ईश्वर नहीं है
जब वे किसी की रोज सेवा करते हैं
तो वह अहम् का स्वरूप बन जाता है
और हमेशा अपनी राह चाहता है

तुम खालीपन का भाव महसूस करते हो
तुम अंदर पीड़ा पाते हो
तुम आत्म-पीड़ा का आनंद लेते हो
स्वार्थी अभिमान से नियंत्रित होकर

उन चीज़ों में निवेश करते हो जो सारहीन हैं
वे चीज़े जो कभी नहीं टिकेंगी
तुम अपने जीवन का परित्याग करने से इंकार करते हो
क्योंकि अतीत में तुम्हें चोट पहुँचाई गई थी

ईश्वर को मानने से इंकार करते हुए
तुम मेरे विश्वास को अलग रखते हो
तुम अपनी सशक्त बुद्धि से जीते हो
वैसे ही जैसे मैं अपने आनंदित हृदय के साथ जीती हूँ

मेरा विश्वास शक्ति से भरा एक उत्प्रेरक है
तुम्हारा खुद में विश्वास, अड़चन पहुँचाने वाला अवरोध है
तुम रेत पर अपने जीवन का निर्माण करते हो
जबकि मैं अपनी शाश्वत चट्टान पर टिकी हूँ

तुम अपनी बुद्धि पर टिके रहो
और तुम स्वार्थी आत्मा में डूब जाओगे
ईश्वर के आकार वाले छिद्र में, खाली स्थान में
ईश्वर के अलावा सब कुछ फिट करने की कोशिश करते हो

अपना कीमती समय बर्बाद करना बंद करो
अभिमान के कारागर से
प्रयोजनहीन और नासमझ पलायन
तो उस दिन, जब ईश्वर सबूत देगा प्रमाण देगा, कुछ ऐसा जिससे तुम इंकार नहीं कर पाओगे -
तुम्हें छोड़ा नहीं जाएगा।।

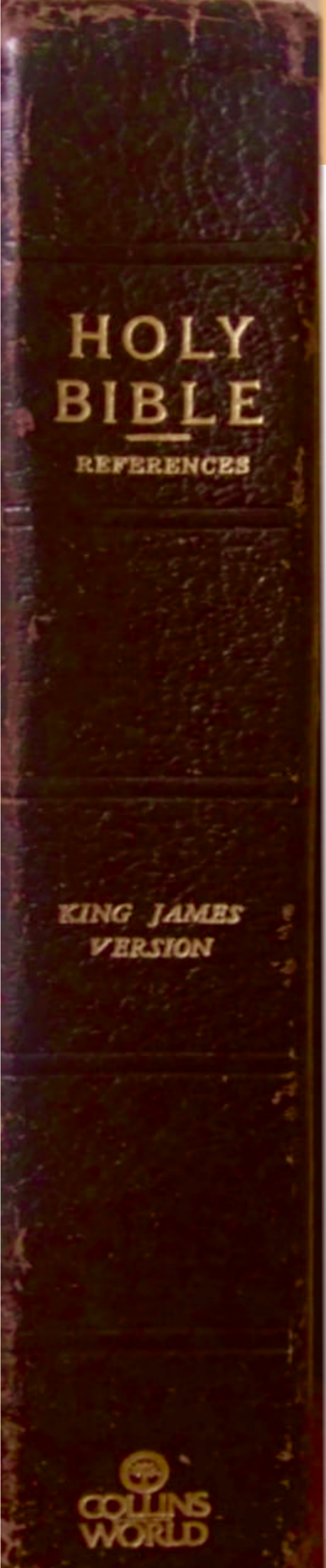

निरंतर समर्पण

बहुत, बहुत समय पहले
मेरा जीवन मैंने समर्पित किया था
अपनी कमियों को जानते हुए
मुझे अच्छी तरह याद है

ईश्वर को पूरी तरह से सौंपकर
उसकी परवरिश से आश्वस्त होकर
उसकी शक्ति पर भरोसा करते हुए
ऐसा कोई बोझ नहीं, जो मैं नहीं उठा सकती

पर किसी तरह मै धीरे-धीरे भटक रही हूँ
उसकी अनमोल निगाहों से दूर
वह वापस लेते हुए जो कभी मैंने समर्पित किया था
उस बोझ को ढोते हुए जो अब हल्का नहीं है

फँस गई हूँ अनंत चक्र में
यह जीवन इतना भ्रामक, इतना जटिल है
मेरी निरंतर कमज़ोरी, अपूर्णता
मुझे छोड़ देती है थकाकर और हताश करके

फिर भी मेरा प्रभु प्रेम से इंतज़ार करता है
वह मेरी गति पर धीरज रखता है
वह मुझे निरंतर आश्वस्त करता है
कि मैं कभी भी निराशजनक नहीं हूँ

अमांडा डीप्पा द्वारा, 6/16/04

निराशा के क्षण

क्या होता है जब मैं अपने भीतर झाँकती हूँ?
मैं निराश और पीड़ा से परिपूर्ण महसूस करती हूँ
क्या होता है जब मैं आसपास देखती हूँ?
मैं हताशा से भरी और भयावह कल हूँ

अगर ये जीवन सचमुच एक परीक्षा है
तो मुझे दुःख है मैं इसमें बुरी तरह असफल हो रही हूँ
इतनी कमज़ोर, भ्रमित, खोयी हुई जब बारिश होती है…
और अब लगातार ओले पड़ रहे हैं

और जब मैं चट्टान की तलहटी से टकराती हूँ
कुछ कोशिश करते हैं मुझे नीचे खींचने की
वे अपनी पीठ फेर लेते हैं, मेरी उपेक्षा करते हैं
एकदम अकेली मैं धीरे-धीरे खिन्न हो जाती हूँ

निराशा के इस पल में जकड़ी हुई
बहते हुए आँसुओं से बेख़बर
क्या होता है जब मैं ईश्वर की तरफ देखती हूँ?
वह मुझे समझता है और वह सुनता है

वह मुझे अनंत उम्मीद देता है
मैं भरोसा कर सकती हूँ- परिवार और दोस्तों पर
जो एकमात्र दिलासा हैं
यह जीवन ही अंत नहीं है

अमांडा डीप्पा, 6/18/04

पल भर के नोटिस में

बेहद कृतज्ञ, कृतज्ञ, कृतज्ञ
उन दुआओं के लिए जो सराबोर कर रही हैं
यूँ तो मैं किसी एक भी दुआ के काबिल नहीं हूँ
उसके प्यार को मैं महसूस करती हूँ और जानती हूँ

इतना प्रिय, प्रिय, प्रिय
मैं जगमगाना चाहती हूँ- ईश्वर के तारे की तरह
वह मुझे देखता है, मुस्कुराता है, मुझ पर दावा करता है
मेरी बच्ची, तुम मेरी हो!

इतनी भर गई हूँ, भर गई हूँ, भर गई हूँ
अपने ईश्वर के आनंद और उसकी मस्ती से
मैं देखती हूँ उसका संपूर्ण प्रताप
और बेताब हूँ इसे दिखाने के लिए

इतना शांतदायक, शांतदायक, शांतदायक
जानती हूँ एक ईश्वर ही है अकेला नियंता
जी रही हूँ वह जीवन जिसे उसने जटिलता से रचा है
जो मेरी आत्मा का शिल्पी है

मैं प्रतीक्षा कर रही हूँ, प्रतीक्षा कर रही हूँ,
प्रतीक्षा कर रही हूँ
कि मेरा प्रभु अपना वचन निभाएगा
शक्ति पा रही हूँ एक खास उम्मीद से

अमांडा डीप्पा द्वारा, 7/14/04

खोल दो मेरी आँखें

आँसुओं से बेख़बर
भय से बेख़बर
कोई राह नज़र नहीं आती
कैद हूँ पिंजरे में
साँसों को तरसती
इतनी कमज़ोर कि चीख, चिल्ला नहीं सकती

मेरा हृदय और आत्मा
हो गए है शक्तिहीन
खत्म हो गया लगता है मेरा सारा विश्वास
मैं चिल्लाती हूँ
बार-बार
“कृपया इस प्याले को मुझ से ले लो”

समय बनता जा रहा है अतीत
उड़ते जा रहे हैं दिन
गतिमान है दुनिया लेकिन मैं खड़ी हूँ निश्चल
निकालो मुझे इस पिंज़डे से
ले लो मेरा दर्द
खोल दो मेरी आँखें, जिससे देख सकूं तुम्हारी रहस्यमय इच्छा

मै गिरती हूँ नीचे
और फिर उठ जाती हूँ
ताकि फिर से धक्का दे कोई
मैं हार रही हूँ ज़िंदगी की दौड़
खो रही हूँ विवेक
क्या कोई तरीका है कि मै जीत सकूं?
मुरझा रहा है भरोसा
क्षीण हो रही है आशा
हालांकि मै लड़ रही हूँ इसे करीब रखने के लिए

तुम दूर क्यों हो
तुम चुप क्यों हो
जब मुझे सचमुच तुम्हारी बहुत ज़रूरत है?

तुमने गढ़ा इस आत्मा को
तुमने इसमें प्राण फूंका
यही वज़ह है कि मैं कर रही हूँ प्रश्न
मैं हताश हूँ, ख़फा हूँ
व्याकुल हूँ और बिखरी हूँ
क्या कोई दूसरी राह है?

जल रहा है हृदय
अवचिलित है विश्वास
हलचल है भीतर कहीं गहराई में
अब मेरे पास बचा है
तो खालीपन
और कोई जगह नहीं है छुपने को

इसे दूर करो
इसे दूर करो
कृपया सुन लो मेरा क्रंदन
चाहे कुछ भी हो ये
जो करने की सोच रहे हो तुम हे प्रभु---
मेरी आँखें खोल दो।

अमांडा डीप्पा
12/27/04

जीसस ने कहा, "न्याय के लिए मैं इस दुनिया में आया हूँ, ताकि दृष्टिहीन भी देख सके ..."
John 9:39

संपूर्णता

परिपूर्णता का एक शांत भाव
व्याप्त हो गया मेरी आत्मा में
मेरा हृदय अब नहीं है व्याकुल
मैं महसूस करती हूँ संपूर्ण और अखंड

जीवन की व्यर्थता
अब बदल गई है अचानक
प्रयोजन के प्रबल भाव से
और मेरे पास नहीं है गँवाने के लिए समय

मेरे जन्म लेने से पहले ही
हे ईश्वर तुमने मेरे लिए बना ली थी योजना
मेरे बारे में तुम्हारे प्यारे ख़्यालात
रेत कणों से भी कहीं ज़्यादा हैं

इसलिए मैं कोशिश करती हूँ कि जी सकूं सार्थक जीवन
और इससे कम पर नहीं हूँ तैयार
अपना हिस्सा पूरा करने का वचन देती हूँ मैं
जानती हूँ मेरे ईश्वर कि शेष तुम करोगे पूरा

अमांडा डीप्पा, 1/24/05

*हे ईश्वर, मेरे लिए तुम्हारे विचार कितने कीमती हैं!
...यदि मैं उनकी गिनती करता तो वे रेत के कणों से भी
कहीं ज़्यादा होते।* *Psalm 139:17-18*

क्षणकि परीक्षाएं

परीक्षा के बाद परीक्षा
मैं दबी हूँ हर तरफ से
चुपचाप बर्दाश्त करते हुए
जीवन की एक और परीक्षा

दनि - ब - दनि
मैं करती हूँ संघर्ष और कोशशि
क िकर सकूँ क्षणकि मुसीबतों का सामना
बनिा यह पूछे, “क्यों?”

मौसम –दर-मौसम
मैं गुज़रती हूँ उतार-चढ़ावों से
चाहे मैं सफल होऊं या वफिल
हमेशा बढ़ता रहता है मेरा वश्िवास

पल – दर - पल
मेरा वश्िवास हो जाता है क्षीण
तब फरि से सुलग उठता है यह
हे ईश्वर, जब मुझे मलिते हो तुम तूफान में

जीत -दर- जीत
मैं तुमको देती हूँ सारा श्रेय
मेरी हर ज़रूरत जो थी कभी
तुमने इसे देखा और तुमने इसे पूरा कयिा

अमांडा डीप्पा
2/2/05

अनंत आशा

भय से बेदम
मैं महसूस नहीं कर सकती अपने हृदय को
देखती हूँ अपने खुद के सपनों को
छन्नि-भन्नि होते, बखिरते हुए

बलिकुल वैसी ही लड़ाई
मैंने लड़ी है वर्षों तक
मेरा सबसे बड़ा डर, एक सच्चाई
मेरी तन्हा प्रतक्रियिा, आँसू

अब भी क्राइस्ट में है पूरी आस्था
फरि भी सामने आती है मेरी कमज़ोरी
जब सब कुछ ईश्वर पर नर्िभर है
और कुछ भी ऐसा नहीं है जो मैं कर सकूं

लेकनि पल भर के लएि मैं हो जाती हूँ कमज़ोर
तब वश्िवास लेता है हलिोरे
मुझे पता है कि मैं उस ईश्वर के हाथों में हूँ
वहीं जहाँ मैं हमेशा से थी

ले लो सब कुछ
तय मौत से कराओ मेरा सामना –
अपनी आखरिी साँस तक मैं कहूँगी
कि ईश्वर अच्छा है

मेरा जीवन है छोटा और क्षणभंगुर
पर अमर है मेरी आशा
परवाह नहीं कि क्या होगा,
मैं नहीं भूलूंगी...
यही है वो ईश्वर, जसिकी मैं कर रही हूँ स्तुति

अमांडा डीप्पा, 2/7/05

हमेशा बोझ तले

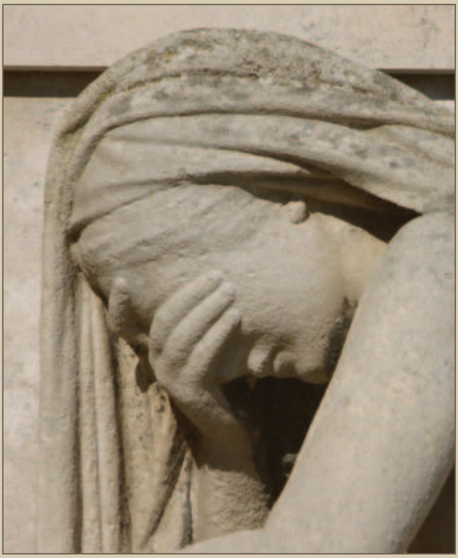

हे ईश्वर, समझने में मेरी मदद कर
डरती हूँ मैं तुमसे पूछने में कि क्यों
क्यों है इतना दर्द, हे प्रभु
इतना कि मैं कराहने लगूँ?

मेरा चेहरा है आँसुओं से तरबतर
और हाँफती हूँ हवा में साँस लेने के लिए
महसूस करती हूँ पिंज़ड़े में कैद और हमेशा के
लिए बोझ से दबी
इतना कैसे बर्दाश्त कर सकता है कोई

अपनी हर कोशिश के बावजूद
यह याद रखते हुए कि ईश्वर तुम मौजूद हो
मैं अब भी दबी हूँ इतने रंज में
अब भी नतमस्तक हूँ निराशा में

मुझसे कहता है मेरा विवेक “शांत रहो”
लेकिन भीतर क्रंदन करता है मेरा हृदय
थक चुका है यह चोटों से
और कहता है मैं नहीं जीतूंगा कभी

पीड़ा है बहुत परिचित
आशाएं हो गई है दूर
कितनी दब गई हूँ इस जिंदगी से
प्रार्थना तक से लगता है डर

मुझे पता है प्रभु तुम्हारी कोई योजना है
लेकिन मैं डरती हूँ इसे जीने से
मैं चाहती हूँ इससे मुँह मोड़ना
और अपने संदेह के आगे झुकना

हे ईश्वर, यकीन करने में मेरी मदद कर
डरती हूँ कहीं तुम्हें न नीचा दिखा दूँ
मैं शर्मिंदा हूँ ये सब छोड़ते हुए
कितना ख़ामोशी से डूब रही हूँ मैं

अमांडा डीप्पा
2/25/05

*अपनी ज़िम्मेदारियाँ ईश्वर को सौंप दो और वह तुम्हारी देखभाल करेगा। **Psalm 55:22***

टुकड़े समेटते हुए

कौंध जाता है मेरा जीवन मेरे सामने
मैं निहारती हूँ चारों तरफ
बिखरे पड़े हैं मेरे अहम् के टुकड़े
यहाँ से वहाँ तक

कोशिश करती हूँ उन्हें समेटने की
उन्हें फिर से वही रूप देने की
और जब नहीं कर पाती यह सब
शर्म से लेट जाती हूँ वहीं

मेरा अडिग विश्वास हो जाता है समभाव
ठीक मेरी आँखों के सामने
किसी मुखौटे के लिए नहीं है समय
दर्द छुपाया नहीं जा सकता

थी कभी चट्टान सी मजबूत
धीरे-धीरे मैं हो रही हूँ असहाय
घटकर रह गई हूँ छोटा-सा पत्थर
नहीं सूझता भागकर जाऊँ कहाँ

हे प्रभु, कहीं अंदर गहरे मैं महसूस करती हूँ तुम्हें
लेकिन मेरी आत्मा है इतनी अकेली
इस दुनिया के दु:ख
रुलाते हैं और तड़पाते हैं इसे

कृपया समेट लो इन टुकड़ों को
फिर से दे दो मुझे नया रूप
सिखा दो मुझे शांत रहना
ताकि कर सकूं अपनी चिंताएं तुम्हारे हवाले

अमांडा डीप्पा
2/28/05

अमांडा की बहन, लॉरा द्वारा उसके लिए एक कविता

फेंक दो टुकड़े

जब कौंधती है तुम्हारी जिंदगी तुम्हारे सामने
मत निहारो चारों तरफ
सर्वशक्तिमान ईश्वर से साथ,
परिवार में मिलेगा तुम्हें दिलासा।
फेंक दो टुकड़ों को नीचे,
मत दो उन्हें फिर से वही रूप,
उठाओ अपना फोन और जान लो मैं तुम्हारे ही पास हूँ,
उसमें मदद करने, जिनका कर रही हो तुम सामना
शर्म से लेटी हूँ मैं
जब देखती हूँ मैं कि कितना कम कर पाती हूँ मैं,
लेकिन जानती हूँ कि तुम्हारे अंदर है बेहद विश्वास,
तुम बचाकर ले जा सकती हो अपना पूरा परिवार।
मुझे बेहद गर्व है उस पर जो कुछ हासिल किया है तुमने,
और कितनी मजबूत हमेशा रही हो तुम,
हालांकि तुम सोचती हो कि तुम बस एक छोटा पत्थर हो,
तब क्या महसूस करती हूँ मैं?
तुम्हारे सामने धूल का एक कण,
जब तुम होगी असहाय, मैं रहूँगी वहाँ
अमांडा, कृपया अकेला महसूस मत करो,
मैं जानती हूँ, मैं नहीं रही हूँ वैसी बहन जैसी हो सकती थी,
लेकिन बताना चाहती हूँ तुम्हें कि मैं बहुत प्यार करती हूँ तुमसे,
और अगर उतनी मजबूत होती जितनी कि तुम,
तो मैं होती कहीं बेहतर सहयोगी और ईसाई, मैं होती।

लॉरा ट्वैलमैन 2/28/05

ईश्वर

मेरा साँस लेना है मुहाल
हाँफ रही हूँ मै और थामे हुए हूँ आँसू।
कब तक दे सकती हूँ धोखा
और लड़ सकती हूँ अपने आँसुओ से?

उधड़ रही है जिंदगी
एक समय पर एक धागा
तेज़ और तेज़
शुरु हो गया मेरा उधड़ना

मै तलाश रही हूँ उत्तर
उन्हें पाना होता जा रहा है और मुश्किल
जल्दी, बहुत जल्दी
संपूर्ण पीड़ा होगी मेरी।

मै महसूस करती हूँ कृतघ्न
क्या मै कराह रही हूँ निरंतर?
एक महीना नही बीता है
जब मै महसूस करती थी बिलकुल स्वस्थ।

कितनी तेज़ी से बदल कटु हुई है चीजें,
कहाँ जा रही है मेरी ज़िंदगी?
मुझे लगता है, छूट रही है मेरी पकड़,
मुझे पसंद नही है अनजान रहना,

शैतान बड़ी कुशलता से सी रहा है,
तेजी से लगा रहा है धागे फिर से मेरे जीवन स्तंभ में,
बुन रहा है अनिश्चितता और संदेह
लगता है जैसे मै हारती जा रही हूँ जीवन की दौड़।

मै काबू में नही हूँ,
लड़ रही हूँ मै जिंदा रहने के लिए
लॉर्ड जीसस मेरी रक्षा करो
सब कुछ है भयानक रूप से गलत।

काम है लगभग बर्दाश्त के बाहर,
रोज़ दामन थाम रही है निराशा,
मुझे धैर्य दो, मेरे लिए बहुत ख़ोफ़नाक है ये
ज़रा सी परेशानी कर देती है दौड़ से बाहर।

चौराहे पर हूँ भ्रमित,
कौन सा रास्ता लूं मै?
मै फँसी हूँ बीच में,
डर है ग़लती न हो जाए।

मेरे कंधों पर यह भार
सहने को है बहुत भारी
धँसती जा रही हूँ रेत में
हे ईश्वर क्या तुम वहाँ हो?

मै अपना भार देती हूँ तुम्हें
हे प्रभु, ले लो सारा भार।
मै हो रही हूँ कमज़ोर हे प्रभु
मुझे डर है गिर न पड़ूँ।

मैने सुना है कि अगर मै पूछूँगी,
तो कुछ मिल सकेगा मुझे,
बहुत कठिन काम है ये
उससे कहीं ज्यादा जितना मैने यकीन किया था।

ठीक है, प्रभु तुम ले लो उन्हें....
मै बंद कर रही हूँ संदेह से भरी मेरी आँखें।
क्या मेरी प्रार्थनाएं नही पहुँचती तुम तक?
कोई अर्थ नहीं रह गया है जीवन का,

हे ईश्वर मै सौपना चाहती हूँ तुम्हें अपनी दुश्चिंताएं,
मै क्या कर सकती हूँ इससे ज्यादा?
मुझे पता है कुछ छूट रहा है मुझसे
हे ईश्वर मै तुमसे कह रही हूँ...

"कहाँ है यह रोशनी,
क्या यह कोई सुरंग है?" अंधी हो गई हूँ मै
"यदि मै तुम्हें दे दूँ अपनी दशा,
क्या तुम मेरी मदद करोगे इसे खोजने में?"

निराशा कुछ नही है
बता नही सकती यह अनुभूति
यह जलती है मेरे भीतर
दर्द का एक अविरल प्रवाह।

मुझे लगता है कि यह मेरा दिल है,
जाने कितनी बार टूटा है यह,
मै आगे जाऊंगी अपनी बहन से,
और तुकों से सजाऊंगी इसे।

मै अपने परिवार में महसूस कर सकती हूँ
शांति की गहरी चाहत,
किसी चीज़ के लिए संघर्षरत है रोज़
ताकि उनके दर्द को मिल सके विराम।

आहें भरी जा रही निरंतर,
वे बातें करते है हार की,
शब्दों में नही कर पाते व्यक्त
हे ईश्वर, हम शरणागत है।

हमें भरोसा है तुम पर,
तुम्हें पता है कि तुम क्या कर रहे हो
लेकिन हमें प्रतीक्षा है कुछ उत्तरों की
उस दर्द की,जो सह रहे है हम

हम ही क्यों?
इस वक्त ही क्यों?

क्या नही सीखा हमने अब तक?

ईश्वरीय सत्ता से इंकार नहीं – बस ईश्वर के लिए प्रश्न

मुझे पता है उत्तर प्रतीक्षा कर रहे है
स्वर्ग में हमारे लिए
हम गुज़र जाएंगे इस संघर्ष से
सिर्फ विश्वास पर भरोसा करते हुए।

विश्वास पर भरोसा करना
सचमुच है बहुत कठिन
मज़बूत बने रहने
और तुझ में केंद्रित रहने में मेरी मदद करो प्रभु।

विश्वास होता है सरसों के बीज की तरह
बस यही है जो मैंने हासिल किया है
बस यही है जिसकी तुझे ज़रूरत है प्रभु
और ये सब मै लाई हूँ।

मै लाना चाहती हूँ और ज़्यादा
और कुछ जो मै करती हूँ
मेरी मुट्ठियाँ कसकर जकड़ लेती है इसे
लेकिन बीच में गिरता दिखाई देता है ये।

हे ईश्वर मै पहले भी रोई हूँ तेरे सामने
कि किसी चीज़ से दबा जा रहा है मेरा हृदय
क्यों मै कराहती हूँ रातों में तेरे सामने
अकेली अंधकार में।

मै सोचती हूँ लगातार
बहस करती हूँ अपने मस्तिष्क में
लड़ती हूँ अपने तर्क से
और सवाल उठाती हूँ दैवीय शक्ति पर।

मै संघर्ष करती हूँ उन चीज़ों
की वज़हों से, जो बाहर हैं मेरे नियंत्रण से
तुम ऐसी चीजें क्यों करते हो
और हमें सर्कस के रिंग क्यों कुदाते हो।

तुम्हारी कोई योजना है
जो बनी है हम सब के लिए
मुझे पता तो है कि तुम सुनते हो मुझे
तुम उत्तर देते हो मेरी पुकारों का।

मैंने उन्हें सुनने की कोशिश नही की
अभी तक तो नही
तुम फेंट रहे हो पत्ते
और मुझे डर है कि क्या मिलेगा मुझे।

तुम्हें पता है, उसमें कुछ है
मै चुपके से इच्छा करती हूँ,
अपनी बहन के लिए एक इच्छा
कभी खत्म न होने के लिए।

मै स्वार्थवश कर रही हूँ उम्मीद
मै चुपचाप करती हूँ प्रार्थना
उसके लिए तुम्हारा इरादा
आज भी नही हुआ है खत्म।

मुझे लगता है हे ईश्वर, तुम्हें उसकी ज़रूरत यहाँ है
लंबे समय के लिए
उसे मत ले जाओ अपनी दुनिया में
मुझे ज़रूरत है उसकी मेरी दुनिया में

मुझे नही पता मै कैसे करूंगी ऐसा
यदि तुमने कहा कि उसे जाना ही है
यदि तुम उसे ले गए हमसे
और कहा “बहुत हो गया।”

यही है जो कभी-कभी सोचती हूँ मै
अपने हृदय की गहराइयों से
कमज़ोरियों के उन पलों में
जो कर देते है मेरे टुकड़े-टुकड़े

अपनी आत्मा की गहराइयों से
इस स्वार्थी दशा से भी कही गहरे बैठकर
मै देखती हूँ खोने के डर से भी आगे
अपनी अनिश्चितिता को।

अपनी उन भावनाओं के भी पार
जो चाहती है वह हर हाल में रहे जिंदा,
मुझे उम्मीद है प्रभु, तुम ले जाओगे उसे स्वर्ग
क्योंकि तब वह हो जाएगी भली-चंगी।

अब और दर्द नही, और पीड़ा नही
मुझे पता है, यही है वो चीज़ जो तुम दोगे उसे
लेकिन नया शरीर पाने के बाद भी,
यही है जो उसके लिए तय था।

यह वह नही है जहाँ मुझे होना चाहिए
मै आनंदित होऊंगी तुमसे फिर मिलकर प्रभु
और हो जाऊंगी मुक्त
यदि उसके पास मौका है, पहुँचने का उस
लक्ष्य तक
मै नही आऊंगी उसकी आत्मा की राह में।

हम हकदार थे कुछ बेहतर के
स्वर्ग है वह स्थान जहाँ होना चाहिए हमें।
इसलिए अगर जाना ही है उसे, मै जाने दूंगी
लेकिन आनंदित होकर नहीं।

लिसा ट्वैलमैन 2/28/05

योजना के अनुसार

डैडी द्वारा: 2/28/05

यह कैसा होगा
दर्द से मुक्त एक जीवन
एक अध्यात्मिक देह
झुर्रियों या धब्बों से मुक्त

एक इल्ली कैसे
जानती है कि एक ककून में
वह जन्मेगी तितली बनकर
जो फड़फड़ा सकती है और हो सकती है अचेत

ईश्वर की जरूर कोई योजना है
लेकिन डर ने मुझे कर दिया है अंधा
नई दिव्य देह के सौंदर्य
और दमक से

मै विचरूंगा अपने लौकिक संसार में
उसके लिए जिसे ईश्वर ने गढ़ा अपने हाथों से
वह करता है मेरे आने का इंतज़ार
योजना के अनुसार

तो क्यों डरूं मै
और चीखूं निराशा में
क्या ईश्वर सच में है
क्या जीवन एक परीक्षा भर है

मै करता हूँ प्रार्थना और संघर्ष
लेकिन निरंतर
होता जा रहा हूँ तेरे
और तेरी आभा की तपन के करीब हे ईश्वर

मै हूँ अशांत और उद्वेलित
यह देखने को कि स्वर्ग में क्या है
एक संपूर्ण अध्यात्मिक देह
और भी बहुत कुछ

जो रखते है भरोसा
पाते है सच्ची आंतरिक शांति
मृत्यु और रोग के
डरों को पराजित करते हुए

किसी दिन हम सब मर जाएंगे
हर बच्चा, स्त्री और पुरुष
इसलिए विवेक से जियो अपना जीवन
ईश्वर की योजना के अनुसार

परमपिता के हाथों में

ये दुनिया मेरी थी
मैने बनाई थी हर योजना
जाने वाले स्थान
मिलने वाले लोग
मेरे मस्तिष्क में था सब

लेकिन मुझे शायद ही पता था
ये सब कुछ था ग़लत
परीक्षाओं से था जूझना
बढ़ाना था विश्वास
आगे की यात्रा, है थकाऊ और लंबी

इसलिए मैने लड़ी भरपूर लड़ाई
और सोचा कि जीत सकती हूँ मैं
रहने,
घूमने और आगे बढ़ने के लिए तैयार
सिर्फ यह महसूस करने के लिए, मैने शुरूआत भर की है

ये दुनिया, मेरी नहीं है हे ईश्वर तुमने बनाई है हर योजना
लेकिन अब भी उठते हैं सवाल
अब भी बढ़ रहा है विश्वास, हे ईश्वर
मैं तेरी हथेली में कर रही हूँ विश्राम

अमांडा डीप्पा
4/7/05

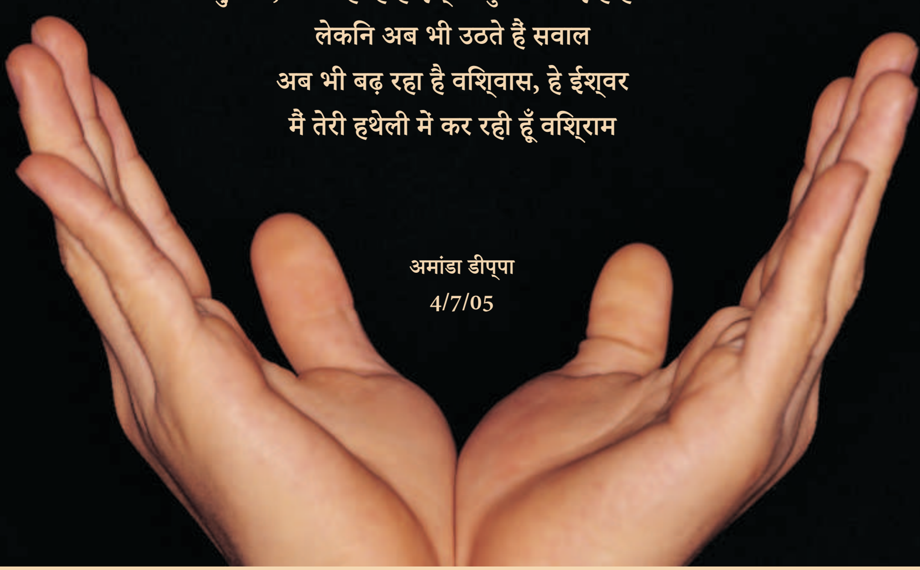

अभी तक तो नहीं

मुझे संशय नहीं प्रभु कि सब कुछ है तुम्हारे नियंत्रण में
फिर भी जलता है कुछ मेरी आत्मा के भीतर
जीने की मेरी चाह
है ज्वाला से कहीं ज्यादा
ये और धधकती है
नहीं तैयार बुझने को

तुम्हारी इच्छा पूरी होगी प्रभु - लेकिन अभी नहीं
मेरे पास हैं सपने तमाम, पश्चाताप तमाम
नहीं करना चाहती मैं व्यर्थ
हर कीमती दिन
तलाशते हुए अपनी चाह
भटकती हुई यहाँ-वहाँ

घड़ी अब भी चल रही है निरंतर
और मैं दे सकती हूँ सब कुछ, बीमार न होने के लिए
मैं करती हूँ विनती और अनुनय
बस हो जाऊं ठीक
कभी-कभी भयभीत होती हूँ
कि लिखा जा चुका है मेरा भाग्य

मत ले जाओ कृपया मुझे, कम-से-कम अभी तो नहीं
इतना कुछ पाया है मैंने, तय है मेरा भविष्य
चीखती है मेरी तरूणाई
जल रहा है मेरा हृदय

लेकिन रुको---
हे ईश्वर, मुझे चाहिए बस तुम्हारा प्रेम।

अमांडा डीप्पा
04/20/05

अब भी प्रतीक्षारत

क्यों, प्रभु क्यों?
मैं लड़ रही हूँ इतनी लंबी और कठनि लड़ाई
बस पाने को एक इंच
और पीछे जाने को एक गज?

कहाँ, प्रभु कहाँ
मैं दौड़ सकती हूँ और सुरक्षति छुप सकती हूँ
ताकि निकिाल सकूं
मेरे शरीर में चुभा ये कांटा?

कब, प्रभु कब
खत्म होगा ये दुःस्वप्न?
इंतज़ार कर रही हूँ कसिी फरश्तिे का
मुझे डर है ईश्वर तुम कभी नहीं भेजोगे।

कैसे, प्रभु कैसे
तुम देने देते हो इतना ज्यादा दर्द
जब मैं कराह रही हूँ वश्विास में
और फरि भी तुम बने रहने देना चाहते हो इसे?

मैं जाऊं कसिके पास
जब ये लगे कि तुम हो ही नहीं?
मैं करूँ क्या
जब लगे कि नहीं है तुम्हें कोई परवाह?

मैं अब भी इंतज़ार में हूँ उस फरश्तिे के
लेकनि बखिर रहा है संशय
कभी आह्लादति रहे हृदय का
जो इंतज़ार में है उस दनि के

अमांडा डीप्पा
6/13/05

एक बहन का प्रेम

क्या कभी भी प्यार न किए जाने से यह बेहतर है कि प्रेम पाया जाए और उसमें डूब जाया जाए।
क्या मै सौप दूँ अपना सारा हृदय ये जानते हुए कि उसकी उम्मीदें है बहुत कम?
क्या यह आसान नहीं होता कि न आते करीब, मेरे ज़ख्मी हृदय को बचाने के लिए,
इसलिए वो जुदा हो गई अगर, क्या टुकड़े नहीं हो जाएंगे मेरी आत्मा के?
बहुत टीसता है ये पहले ही, क्योंकि मै हो गई हूँ उसके बहुत करीब
उसे बीमार देखकर अगर मुझे होता है दर्द, कैसा महसूस होगा अगर वह चली गई?
जब पहले-पहल वो बीमार पड़ी तो मै दौड़ी, क्योंकि मुझे भय था करीब होने का
मै कल्पना करती हूँ कि काश बचा सकूं स्वयं को कमज़ोर होने से-पीड़ा की घातक चोट से,
मुझे बताया गया कि मुझे पछतावा होगा, अगर मै उसे न जान सकी अच्छी तरह,
उसे प्यार करूँ जब तक वो है इस धरती पर, हर कीमती पल में।
मैंने उनको सुना जिनके बारे में सोचती थी कि सबसे ज़्यादा जानती हूँ, उन लोगों से सुना जिन्हें खो चुकी हूँ पहले।
इसलिए मैंने अपने संपूर्ण हृदय से अपनी बहन को प्यार किया और इससे ज़्यादा नहीं कर सकती थी उससे प्रेम।
इसलिए अब मै रात में बिस्तर पर जाती हूँ तो प्रार्थना करती हूँ- कि वह कल का दिन देखे।
उम्मीद करते हुए कि मुझे इस पीड़ा से बचाने के लिए ईश्वर उसके जीवन की रक्षा करेगा।
मै उसे और जिस दर्द में वह है, उसे देखती हूँ और मानती हूँ मै अपनी पसंद के बारे में सोचती हूँ
एक ऐसे हृदय से बिना शर्त प्यार करूंगी, जो संवेदनशील तो है लेकिन डरा हुआ नहीं है।
इसलिए पीछे देखती हूँ तो कह सकती हूँ कि अपने दिल का जोखिम उठाकर मुझे कोई पछतावा नहीं है,
अगर मैंने उस तरह से प्यार न किया होता जैसा मै करती हूँ, तो इस फटे जा रहे हृदय का इतना बुरा हाल न होता।
अगर मैंने इसे प्यार नहीं किया होता और अपना सर्वस्व न दिया होता,
तो मै उसे बिलकुल भी न जानने के नुकसान की अनुभूति नहीं कर पाती।

लिसा ट्वैलमैन 6/19/05

मत मानो कभी हार

तुम कभी छोड़ मत देना
जीने की चाहत
बहुतों को है तुम्हारी ज़रूरत
तुम्हारे पास बहुत कुछ है देने को
जानता हूँ मैं जीवन हो सकता है कठिन
और आते हैं ऐसे दिन जब डूब जाओ तुम
जब बहुत ज़्यादा हो जाए भार
किसी को नीचे दबाने के लिए
तो निहारो उस ईश्वर को
जो खड़ा है तुम्हारे सिरहाने
और करो प्रार्थना कि उसके वचन
गूँजने लगें भीतर
तुमने संघर्ष किया है पहले भी
और मुकाबला किया है अपने डर का
एक बार में एक दिन ज़िंदा रहकर
तुमने वढ़ा लिए है बरसों
इसलिए पहन लो अपना कवच
और उठाओ अपनी तलवार
नकारात्मक विचारों के लिए
हम नहीं कर सकते बर्दाश्त
मैं रहूँगा तुम्हारे साथ
राह के हर कदम पर
और जश्न मनाऊंगा जीतों का
क्योंकि हम जीतते हैं हर दिन

डैडी द्वारा: 6/20/05

जीवन से त्रस्त, गंतव्य से प्रेरित

तुम पूछती हो क्या है ये जीवन
क्यों हैं हम यहाँ धरती पर?
क्रोध में हम चीखते हैं, चिल्लाते हैं
हमारा प्रयोजन नहीं है उतना स्पष्ट

कुछ कहते हैं कि यह यात्रा है
केवल समय ही बताएगा
दूसरों का तर्क है कि यह गंतव्य है
क्या यह स्वर्ग होगा या नर्क

जब चीज़ें होती है ग़लत जीवन में
और ग़लत चीज़ें घटती हैं चारों तरफ
क्या तुम सब छोड़ देते हो क्राइस्ट पर
या खड़े होंगे तुम ठोस धरातल पर?

किसी ने वचन नहीं दिया कि यह होगा आसान
घुमा लेना अपना चेहरा
जीवन में खराब को नज़रअंदाज़ करना
और कोशिश करना कि रहो विनम्र

ईर्ष्या और इच्छा
खा जाते हैं हमारा सांसारिक विवेक
वही चाहना जो है दूसरों के पास
शैतान की योजना का ही है हिस्सा

इसलिए जब थक जाओ जीवन से
और चिंता हो कि यह परीक्षा है
बस हमेशा थामे रहो अपना विश्वास
और शेष के बारे में मत करो चिंता

डैडी द्वारा: 6/23/05

ईश्वर के बिना कैंसर को समझना

हे ईश्वर, यह क्यों हो रहा है? मैं हिल नहीं सकती, मैं नहीं ले सकती श्वास। आहत है मेरा हृदय, लगता है जैसे मरोड़ा और निचोड़ा जा रहा है इसे, और खींचा जा रहा है दस अलग दिशाओं में। मैं देख नहीं सकती। आँसू बंद रखते हैं मेरी आँखें। मैं कोशिश कर रही हूँ उन्हें झपकने की, मैं कोशिश कर रही हूँ मज़बूत होने की। लेकिन भीतर ही भीतर मैं बिखर रही हूँ प्रभु। भीतर ही भीतर मैं हो रही हूँ टुकड़े-टुकड़े। मेरा जीवन कौंधता है मेरे समक्ष। मुझे डुबो देते हैं सवाल। हे प्रभु, मैं ये नहीं कर सकती। फिर से नहीं।

क्या होगा मेरे जीवन का? मेरे बाल उगे हैं अभी-अभी, तीन साल लगे हैं इसमें। कृपया फिर से मत छीनो मुझसे इनको। क्या होगा मेरी योजनाओं का? मैं जाना चाहती हूँ वापस सैन डिएगो। मैं जाना चाहती हूँ स्कूल, जैसे जाते हैं सब। मैं हो जाऊंगी ग्रेजुएट 3 वर्षों में। मैं होना चाहती हूँ अध्यापक, क्या होगा उन बच्चों का जिनकी जिंदगियों को छूना था मुझे? क्या होगा मेरे परिवार का? मेरी माँ, मेरे डैडी, मेरी बहनें, मेरा नन्हा सा भाई। मुझसे अपेक्षा है एक ताकतवर बड़ी बहन बनने की। मैं उन्हें उस हालत से फिर गुज़रने नहीं देना चाहती...मैं इसे करूँगी अकेले। मैं चाहती हूँ कि लीसा और लॉरा का हो जाए विवाह। मैं बनना चाहती हूँ दुल्हन की सखि। मैं चाहती हूँ माइकेल हाई स्कूल से ग्रेजुएट पूरा करे। मैं चाहती हूँ कि जब मेरे माँ-बाप बूढ़े हों, तो मैं करूं उनकी देखभाल। मैं नहीं चाहती कि वे मेरी देखभाल करें...मैंने इस तरह होने की कभी कल्पना नहीं की थी।

हे ईश्वर मैं अब भी डूब रही हूँ...यह बदतर होता जा रहा है...मैं कोई दुःस्वप्न देख रही हूँ ये मेरी जिंदगी नहीं है। ये मेरा शरीर नहीं है। मैं चाहती हूँ नया शरीर क्योंकि यह टूट चुका है। इसने मुझे धोखा दिया है।

हे ईश्वर, मैं इंतज़ार नहीं कर सकती। इंतज़ार मुझे मार रहा है। धीरे-धीरे और दुर्भावना से यह खा रहा है मुझे। हे ईश्वर मैं नहीं कराना चाहती सर्जरी, उन्हें मुझे काट कर फिर से मत खोलने दो। हे प्रभु, मैं और दाग नहीं चाहती, कोई कैसे इस तरह मुझसे करेगा प्यार? हे ईश्वर, मैं नहीं होना चाहती उनसे फिर से आहत, नहीं होना चाहती और ज़्यादा बीमार। उनसे कहो मुझे आईवी देना बंद कर दें, उनसे कहो मुझे कुरेदना और उकसाना बंद कर दें, उनसे कहो कि वे फिर से मेरी कीमोथेरेपी के बारे में बातें करना बंद कर दें। हे पिता, क्योंकि मैं यह फिर से नहीं करा सकती। मैं यह फिर से कराना नहीं चाहती। मैं नहीं चाहती। कृपया उनको मुझे ज़हर मत देने दो। मैं हर दिन उछाला नहीं जाना चाहती, मैं बीमार नहीं होना चाहती, मैं अपने माँ-बाप के चेहरों को नहीं देखना चाहती क्योंकि वे मुझे सुनते हैं और दौड़ते हुए आते हैं मेरा कटोरा धोने। एक बॉल में लिपटी मैं फिर से सोना नहीं चाहती फर्श पर। मुझे अपना बिस्तर पसंद है। मुझे अपनी इस समय की जिंदगी पसंद है। कृपया मुझसे सब कुछ मत छीनो। अभी नहीं।

मेरे भविष्य का क्या होगा? हे ईश्वर, मेरे जीवनसाथी का क्या होगा? क्या वह मुझे अब भी प्यार करेगा जब मैं बीमार हूँ, क्या वह अब भी सोचेगा कि मैं सुंदर हूँ जबकि मैं गंजी, सफेद हो चुकी हूँ और मिट चुकी हूँ? क्या वह अब भी मेरी भूरी आँखों में देखना चाहेगा जब वे काली पड़ चुकी हैं, धंस चुकी है और आँसुओं में डूबी हैं? क्या वह मेरे सिरहाने खड़ा रहेगा? क्या वह भाग जाएगा? उस परिवार का क्या होगा प्रभु, जो मैं किसी दिन बनाना चाहती थी? उन बच्चों का क्या होगा जो मैं चाहती थी? नन्हा हेले और ईवान। हे ईश्वर, क्या कभी मुझे मौका मिलेगा कि मैं प्रतिदिन उनके लिए लंच बना सकूं और उनके नैपकिन पर लिख सकूं "मैं तुमसे प्यार करती हूँ"? मेरी युवावस्था का क्या होगा? क्या मैं इसका आनंद ले सकूंगी? जी भर कर जी सकूंगी ये सब? उन समुद्र-तटों का क्या होगा जिनकी मैंने अभी तक सैर नहीं की है, क्या होगा उन पर्वतों का जिन पर मैं चढ़ी नहीं हूँ, क्या होगा उन मित्रों का जो मैंने अभी तक बनाए नहीं हैं, उन मुस्कुराहटों का जो मैंने दी नहीं है और उन जिंदगियों का जिन्हें मैंने अभी तक छुआ नहीं है प्रभु? हे प्रभु, मैं ही क्यों? हे ईश्वर मैं यह नहीं कर सकती, मैं अकेला महसूस करती हूँ, मैं निराश महसूस करती हूँ, मैं बिखरी महसूस करती हूँ, मैं खत्म महसूस करती हूँ। मेरी मदद करो।

ईश्वर के साथ कैंसर का अनुभव

हे प्रभु, तुम कितने अद्भुत हो। मैं चल फिर या साँस नहीं ले सकती क्योंकि मैं तुम्हारे प्रेम में जकड़ी हूँ। मेरे हृदय में वेदना थी और तुमने मुझे मेरे डर से उबारा। मेरा हृदय इससे परिपूर्ण है और उमड़ रहा है और मैं काबू भी नहीं रख सकती कि मैं कैसा महसूस करती हूँ...हे ईश्वर, यह सभी स्थानों पर छलक रहा है, यह इतने आनंद से खदबदा रहा है। मेरे जीवन में तुम्हारी अद्भुत मौजूदगी प्राणदायी है। बहुत तरीकों से, मैं अब भी तुम्हें नहीं देख सकती प्रभु, क्योंकि तुम्हारे प्रकाश में मैं लगभग अंधी हो गई हूँ! हे ईश्वर, मैं अब कैसे भयभीत हो सकती हूँ? मैं तुमसे कारण कैसे पूछ सकती हूँ? प्रभु, क्या मैं तुमसे कभी सवाल कर सकती हूँ? एक बार के लिए मैं इस मामले में सही हूँ कि मैं इससे निपट नहीं सकती, मैं डूब रही हूँ। लेकिन हे ईश्वर तुम्हारे साथ! तुम्हारे माध्यम से और तुम्हारे कारण से, मैं सब कुछ कर सकती हूँ। तुमने मेरा भार ले लिया है, मुझे यह अकेले नहीं करना है...यह संभव नहीं है। लेकिन यह जानकर कि मेरा ईश्वर हमेशा भरोसेमंद रहेगा, मुझमें वह आशा जगाती है जिसकी मैंने कभी कल्पना नहीं की थी। मैं इतनी भाग्यशाली हूँ फिर भी किसी चीज़ की हकदार नहीं। और मेरी उम्मीद तुमसे है प्रभु, मुझे उम्मीद होगी मेरे लिए तुम्हारी योजना से, मेरे लिए तुम्हारी इच्छा से, मेरे लिए दिए गए तुम्हारे भविष्य से....और वर्तमान तो तुमने मुझे दे ही दिया है। हे ईश्वर मैं ही क्यों? तुमने क्यों अपनी अच्छाई, प्रेम और दया से मेरे जीवन को अपनी कृपा से भर दिया है? तुमने क्यों मेरे सामने स्वयं को प्रकट कर दिया है और मुझे अवसर दिया है कि मैं तुम्हारे सामने घुटनों पर झुकी रहूँ? तुमने क्यों अपने दर्शन देकर मुझ पर कृपा की, जब इतने लंबे समय तक मैं तुम्हारी अद्भुत योजना और पवित्र प्रयोजन से अंजान थी? जीवन की संपूर्णता के प्रति अंजान। हे ईश्वर, मैं तुम्हारा गुणगान करना कभी बंद नहीं करूँगी...मेरे अंधकारपूर्ण, अधम स्थान में मेरे प्रति तुम्हारे अद्भुत प्रेम के लिए मैं तुम्हारे नाम और मुस्कुराहट का गुणगान करूंगी। मैं शायद ही अपने को रोक सकूं। मैं नई शख्सियत हूँ। क्राइस्ट ने मेरे जीवन को ऐसे बदल दिया है जिसकी मैंने कभी अपेक्षा नहीं की थी और कभी समझ नहीं पाऊंगी। ईश्वर तुम कितने कृपालु हो। जिस प्रेम से तुमने मुझे सराबोर कर दिया है, वह उमड़ रहा है...एक ऐसा शब्द जिसका मैं अब बहुत ज़्यादा इस्तेमाल करती हूँ, लेकिन इसके अलावा और कुछ इससे बेहतर मेरा वर्णन नहीं कर सकता। मैं ईश्वर की सेवा के लिए खुशी और शांति और श्रद्धा और उत्साह से सराबोर हूँ। यह फूट कर निकल रहा है और मैं चाहती हूँ कि हर कोई इसे जान ले और महसूस कर ले, क्योंकि यह बेहद विस्मयकारी और खूबसूरत चीज़ है और हर किसी को इसे अनुभव करने का अवसर मिलना चाहिए। हे ईश्वर, तुम कैसे एक टूटे, भ्रमित और पूरी तरह खत्म हो चुके मुझ जैसे बच्चे का रूपांतरण करके उसका प्रयोग करते हो और उसे जीसस क्राइस्ट का विनम्र शिष्य बना देते हो, जो प्रेम और दया के तुम्हारे संदेश के साथ भीतर से बाहर की ओर जल रहा हो? मुझे कभी पता ही नहीं था कि मैं अंधी थी। मुझे कभी पता ही नहीं था कि मैं कितने लंबे समय से कमी महसूस कर रही थी। मुझे कभी पता नहीं था कि मेरे पास सुरक्षा का एक बाहरी कवच है जिसने इतना सब कुछ दिया। और मैंने कभी पूरी तरह समझा ही नहीं था कि क्राइस्ट के लिए मृत्यु का वरण करना कितना बंधनमुक्त करने वाला और मर्मस्पर्शी है। किस तरह से मेरे भीतर हर कामना का मर जाना, मेरे सर्वस्व को समर्पित करना मेरे हृदय को भर सका और मुझे संपूर्ण और निर्विवाद जीवन दे सका। मैं अपनी ओर से जीसस क्राइस्ट से भयभीत नहीं होऊंगी, मैं अपने प्रेम और विश्वास और भक्ति में कभी नहीं डगमगाऊंगी...फर्क नहीं पड़ता कि मुझसे क्या ले लिया गया है। मैंने पहले भी यह कहा है और मैं इसे अब और ज़्यादा समझ गई हूँ-हे ईश्वर, तुम मेरा प्रेम, मेरा स्वास्थ्य और मेरा जीवन ले सकते हो और मैं प्रभु जीसस क्राइस्ट का गुणगान कभी बंद नहीं करूंगी। स्वर्ग में मेरे परमपिता के लिए मेरे होंठों पर उसके गुणगान को कोई नहीं रोक सकता, मुझे कोई भय नहीं, अथवा अंधकार या अकेलापन या टूटापन नहीं। सच तो यह है कि मैं परमपिता का और भी गुणगान करूंगी। मैं अपने हृदय और आत्मा को पूरी तरह से ईश्वर के वचनों में और उसके प्रयोजनों के समक्ष रखती हूँ, क्योंकि मेरे पास खोने के लिए कुछ नहीं है और पाने के लिए सब कुछ है।

परमपिता का गुणगान करो जिसे मैं ईमानदारी से और आनंद के साथ घोषित कर सकती हूँ, "जीना क्राइस्ट है और मरना कुछ हासिल करना है।"

Philippians 1:21

मेरे परिवार की बाइबिल की पसंदीदा आयतें

मम्मी:
ये प्रभु ही है जो तुम्हारे समक्ष जाता है। वह तुम्हारे साथ होगा, वह तुम्हें न तो छोड़ेगा, न ही तुम्हारा परित्याग करेगा। न डरो न हतोत्साहित हो।
Deuteronomy 31:8

डैडी:
और हमें पता है कि जो ईश्वर से प्रेम करते हैं, उनके लिए सब चीज़ें अच्छाई के लिए ही काम करती हैं, उनके लिए, जो उसके प्रयोजनों के अनुसार बुलाए जाते हैं।
Romans 8:28

लॉरा:
भाग्यशाली है वह व्यक्ति जो ईश्वर में विश्वास रखता है, जिसका विश्वास ईश्वर है। वह उस पेड़ की तरह है जिसे पानी से सींचा जाता है, जिसकी जड़े जलधारा से होकर निकलती हैं मगर जब गर्मी आती है तो भयभीत नहीं होता, क्योंकि इसकी पत्तियाँ हरी-भरी रहती हैं, और यह सूखे के वर्षों में चिंतित नहीं होता क्योंकि इसमें फल आने बंद नहीं होते। Jeremiah 17:7-8

इसलिए हमें हताश नहीं होना चाहिए। हालांकि बाहरी तौर पर हम व्यर्थ होते जा रहे हैं, लेकिन भीतर से हमें हर दिन नयापन दिया जा रहा है। हमारी मामूली और क्षणिक समस्याओं से हम शाश्वत आभा हासिल करते हैं जो उन सबसे महत्वपूर्ण है। इसलिए हम अपनी निगाहें उस पर केंद्रित न करें जो दिख रहा है, बल्कि उस पर करें जो अदृश्य है, क्योंकि जो दिखता है वह अस्थायी है, लेकिन जो नहीं दिखता वह शाश्वत है।
2 Corinthians 4:16-18

लीसा:
उनके साथ आनंदित हों जो आनंदित होते हैं, उनके साथ रोएं जो रोते हैं। एक दूसरे के साथ सौहार्द से रहें। अभिमानी न बनें बल्कि दीन-हीन के साथ सहयोग करें। अपनी नज़र में कभी बुद्धिमान न बनें।
Romans 12:15-16

सबसे ऊपर, एक दूसरे से नम्रतापूर्वक प्यार करते रहें, क्योंकि प्रेम पापों की ढेरी को ढक देता है। बिना शिकायत के एक दूसरे का सत्कार करें। चूंकि हर किसी को उपहार मिला है, एक दूसरे की सेवा के लिए इसका इस्तेमाल करें, क्योंकि ईश्वर के अच्छे फरिश्ते कृपा बदलते रहते हैं।
1 Peter 4:8-10

माइकेल:
विश्वास के साथ जीएं, जो दिखता है, उसके साथ नहीं।
2 Corinthians 5:7

जीसस सबके लिए उपलब्ध हैं

अमांडा की कामना थी और अंतिम इच्छा थी कि उसकी कविताएं पुस्तक के रूप में रखी जाएं और दूसरों को यह दिखाने के लिए दी जाएं कि उसने अपने विश्वास से कैसे शक्ति हासिल की।

जब उसने Understanding Cancer WITHOUT God और Experiencing Cancer WITH God कविताएं लिखीं, तो आप देख सकते हैं कि उसने अपना विश्वास जीसस क्राइस्ट के प्रति रखना क्यों चुना। उसका ध्यान अब इस बात पर नहीं रह गया था कि उसे कितनी साँसें और लेनी हैं, बल्कि उस बात पर था कि अपनी अंतिम साँस के बाद वह कहाँ जा रही है।

अगले पन्ने पर एक आमंत्रण है – उन लोगों को प्रोत्साहित करने के लिए, जो ईश्वर के प्रति विश्वास की अमांडा की यात्रा से प्रेरित हुए हैं। वही शक्ति जिसने अमांडा को मजबूती दी और उसे इतनी शानदार कविताएं लिखने के लिए प्रेरित किया, आपको भी आशा, प्रोत्साहन और सांत्वना दे सकती है। यदि अमांडा ने जीसस को जानने और उस शक्ति तथा मजबूती को हासिल करने, जो अबूझ प्रेम से मिलती है, के लिए आपके हृदय में उत्कंठा पैदा की है, तो मैं प्रार्थना करता हूँ कि गहन चिंतन के किसी शांत क्षण में आप अपना जीवन केवल एक उस परमात्मा को समर्पित करें, जो आपकी कामनाओं या कल्पनाओं से भी कहीं ज़्यादा असीमित रूप से कर पाने की क्षमता रखता है।

क्योंकि ईश्वर ने संसार को इतना प्रेम किया कि उसने अपना एकमात्र और इकलौता पुत्र दे दिया, जो कोई भी उसमें विश्वास रखता है, वह कभी नहीं मिटेगा बल्कि उसका जीवन शाश्वत होगा।

John 3:16

उन्हें याद दिलाओ, "मैं" फिर से आ रहा हूँ।
मार्ग तैयार करो, क्योंकि राजा आ रहे हैं!

मुक्तदायिनी प्रार्थना

अपने प्रभु और उद्धारक के रूप में, जीसस के साथ नया जीवन आरंभ करने के लिए, हृदय से की गई, नीचे दी गई प्रार्थना पहले कदम के लिए अच्छी है:

हे दिव्य परमपिता,
मुझे पता है कि मैंने तुम्हारे विरुद्ध पाप किए हैं और मेरे पापों ने मुझे तुमसे अलग किया है। मैं तुमसे क्षमा चाहता/चाहती हूँ। मुझे सचमुच खेद है और अब मैं अपने पापी अतीत से दूर जाना चाहता/चाहती हूँ। मुझे विश्वास है कि हे ईश्वर तुम्हारा पुत्र, जीसस क्राइस्ट, मेरे पापों के कारण सूली पर चढ़ा और मृत्यु को प्राप्त हुआ, वह मृत्यु से जीवित होकर पुन: प्रकट हुआ, आज भी जीवित है और मेरी प्रार्थनाएं सुनता है। मैं जीसस को अपने हृदय में आमंत्रित करता/करती हूँ और उससे अपना प्रभु और उद्धारक बनने का अनुनय करता/करती हूँ। कृपया अपनी पवित्र आत्मा को भेजो ताकि वह तुम्हारी आज्ञा का पालन करने में मेरी मदद कर सके और मुझे समझा सके और इस बारे में मेरा ज्ञान बढ़ा सके कि हे प्रभु तुम कौन हो और मेरे लिए तुम्हारा अपार प्रेम क्या है। कृपया ऐसा व्यक्ति बनने में मेरी मदद करो, जैसा तुम चाहते हो कि मैं बनूँ। मुझे अपने उदाहरण का पालन करने और मेरे शेष जीवन में तुम्हारी इच्छा का पालन करने में मदद करो। मैं अपने प्रभु और उद्धारक, जीसस क्राइस्ट के अनमोल और पवित्र नाम पर यह प्रार्थना करता/करती हूँ। आमीन।

यदि आप यह प्रार्थना करते हैं तो अपनी अध्यात्मिक उन्नति को जारी रहना और अपने विश्वास को मज़बूत करना जरूरी है। प्रारंभिक बिंदु के रूप में, मैं सिफारिश करता हूँ कि आप मार्क के धर्मसिद्धांत (Gospel of Mark) या जॉन के धर्मसिद्धांत (Gospel of John) को पढ़कर शुरुआत करें। और अधिक समझने के लिए किसी चर्च में शामिल होना या किसी छोटे बाइबिल अध्ययन समूह में शामिल होना भी मददगार है। यदि आपके सवाल हों, या किसी से बस बात करना चाहते हों, तो आपका स्वागत है कि आप मुझे कॉल करें या ई-मेल अथवा टेक्स्ट भेजें और मैं सहायता के लिए जो कुछ कर सकता हूँ, करूंगा। मेरी संपर्क सूचनाएं अमांडा की कविताओं के पिछिले कवर पर है। यदि आप मुझे अपना नाम प्रदान करते हैं तो मैं आपके लिए प्रार्थना कर सकता हूँ।

ईश्वर से प्यार करो – दूसरों से प्यार करो

एक ईश्वर
एक व्यक्ति

सुखद स्मृति में
अमांडा मिशेल (ट्वैलमैन) डीप्पा
10 जून, 1982 – 19 जुलाई, 2005

अंग्रेजी, स्पेनिश, चीनी, जापानी, कोरियाई, वियतनामी, ग्रीक, हिब्रू, रूसी, अरबी,
स्वाहिली, टैगालॉग, तेलुगु, फ्रेंच में कविता की अतिरिक्त पुस्तकों
के लिए, कृपया www.amandaspoems.com पर संपर्क करें
टॉम ट्वैलमैन से (949) 923-1047 पर
ईमेल: allmo108724@gmail.com

© Copyright 2005, 2015, 2019, 2020, 2026